

दुग्ध सरिता

मूल्य ₹ 75

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम
जुलाई - अगस्त, 2018



विश्व दुग्ध दिवस



www.indairyasso.org



Kind Attention
IDA Institutional Members



IDA has established a Convention Centre for its Institutional Members at IDA House in New Delhi. Convention Centre aims to provide Institutional members with working space for various dairy and food projects. This will facilitate the members to coordinate their dairy development activities from New Delhi.

Space is now available in the Convention Centre.

Interested Institutional members may contact

Secretary (Establishment)

Indian Dairy Association

Ph.: 011-26179780/26165237/26165355

Email: idahq@rediffmail.com



दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम
इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका
वर्ष : 2 अंक : 4 जुलाई-अगस्त 2018

सम्पादकीय मंडल

अध्यक्ष

डॉ. जी.एस. राजौरिया
अध्यक्ष, इंडियन डेरी एसोसिएशन

सदस्य

डॉ. अनिल कु. श्रीवास्तव
अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल,
नई दिल्ली

डॉ. ओमवीर सिंह
प्रबंध निदेशक
एनडीडीवी डेरी सर्विसेस
नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक
वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक
सहकारी संघ लिमिटेड,
पटना

श्री किरिटी मेहता
प्रबंध निदेशक
भारत डेरी, कोल्हापुर

डॉ. रामेश्वर सिंह
कुलपति
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,
पटना

डॉ. बी.एस. बैनिवाल
प्राध्यापक
लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं
पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, एचएयू
कैम्पस, हिसार

डॉ. अर्चना वर्मा
प्रधान वैज्ञानिक
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान,
करनाल

डॉ. अनूप कालरा
कार्यकारी निदेशक
आयुर्वेद लिमिटेड, गाजियाबाद

प्रकाशक

श्री नरेश कुमार मनोट

संपादक विज्ञापन व व्यवसाय
डॉ. जगदीप सक्सेना श्री नरेन्द्र कुमार पांडे

संपर्क

इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सैक्टर-IV,
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022
फोन : 011-26179781
ईमेल : dsarita.ida@gmail.com

विषय सूची

अध्यक्ष की बात, आपके साथ 4

रिपोर्ट



देश भर में मनाया गया
विश्व दुग्ध दिवस
जगदीप सक्सेना 8

लाभकारी



गाय का गोबर भी मूल्यवान
रूपसी तिवारी, अमनदीप सिंह
तथा त्रिवेणी दत्त 12

आहार



दुधारु पशुओं को खनिज मिश्रण दें,
दूध उत्पादन बढ़ाएं
डा. पंकज कुमार सिंह एवं डा. पल्लव शेखर 16

उपयोगिता



बकरी का दूध, बहुत खूब
वीना एन. और ए.के. पुनिया 23

सलाह



बरसात के मौसम में पशुपालन
में सावधानियां
डा. राजेन्द्र सिंह 25

परंपरा



गोचरभूमि की महत्ता
श्री गौरीशंकरजी गुप्त 30

रिपोर्ट



अजमेर डेरी में नये मिल्क
प्रोसेसिंग प्लांट का भूमि पूजन 32

प्रबंधन



स्वच्छ और सुरक्षित दूध उत्पादन
डा. संजय कुमार भारती, डा. सविता कुमारी,
डा. अंजय एवं डा. पुरुषोत्तम कौशिक 34

गाइड



साइलेज एवं 'हे' के रूप में
हरा चारा संरक्षण
रजनी कुमारी, संजय कुमार, बसंती ज्योत्सना
एवं अमर सिंह मीना 38

डिस्क्लेमर

लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं, उनसे आईडीए की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार आईडीए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुनः प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य

एक प्रति : 75 रु.



इंडियन डेरी एसोसिएशन

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) भारत के डेरी सेक्टर का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है। सन् 1948 में गठित इस संस्था ने देश को विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन के शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वर्तमान में इसके 3,000 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डेरी उद्यमी, डेरी किसान, पशुपालक और डेरी के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने वाले डेरी कर्मी शामिल हैं। आईडीए द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर ज्वलंत विषयों पर सम्मेलन, संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसकी सिफारिशों पर भारत सरकार द्वारा गंभीरता से विचार किया जाता है। आईडीए का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में कार्यरत हैं। साथ अनेक राज्यों में इसके चैप्टर भी सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों तक शोध परक व तकनीकी जानकारी और उपयोगी सूचनाओं के प्रसार के लिए आईडीए द्वारा पिछले लगभग सात दशकों से 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' और 'इंडियन डेरीमैन' का प्रकाशन किया जा रहा है। ये दोनों ही पत्रिकाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं। द्विमासिक हिन्दी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन आईडीए की नयी पहल है।

आईडीए के पदाधिकारी

अध्यक्ष: डॉ. जी.एस. राजौरिया

उपाध्यक्ष: डॉ. सतीश कुलकर्णी और श्री ए.के.खोसला

सदस्य

चयनित: श्री आर.एस. सोढी, डॉ. जी.आर.पाटिल, डॉ. राजा रतिनम, डॉ. के.एस. रामचन्द्र, डॉ. जे.वी. पारिख, डॉ. एस.के. कनौजिया, श्री सुधीर कुमार सिंह, श्री किरीट के. मेहता, श्री राजेश सुब्रमनियन, डॉ. गीता पटेल, श्री रामचन्द्र चौधरी और श्री टी.के. मुखोपाध्याय **नामित सदस्य:** श्री अरुण नरके, श्री एस.एस.मान, डॉ. आर. चट्टोपाध्याय, श्री सी.पी. चार्ल्स, श्री अरुण पाटिल, श्री मिहिर कुमार सिंह, डॉ. आर.आर.बी. सिंह और श्री संग्राम आर. चौधरी
मुख्य कार्यालय: इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए भवन, सेक्टर- IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली- 110022, टेलीफोन: 26170781, 26165237, 26165355, फैक्स - 91-11-26174719, ई-मेल: idahq@rediffmail.com, www.indairyasso.org

क्षेत्रीय शाखाएं एवं चैप्टर्स

दक्षिणी क्षेत्र: श्री सी.पी. चार्ल्स, अध्यक्ष, आईडीए भवन, एनडीआरआई परिसर, अडुगोडी, बंगलुरु-560 030, फोन न. 080-25710661, फैक्स-080-25710161.
पश्चिम क्षेत्र: श्री अरुण पाटिल, अध्यक्ष; ए-501, डाइनेस्टी बिजनेस पार्क, अंधेरी-कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई-400059 ई-मेल: arunpatilida@gmail.com
उत्तरी क्षेत्र: श्री एस.एस. मान, अध्यक्ष; आईडीए हाउस, सेक्टर IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली-110 022, फोन- 011-26170781, 26165355. **पूर्वी क्षेत्र:** डॉ. आर. चट्टोपाध्याय, अध्यक्ष, द्वारा एनडीडीबी, ब्लॉक-डी, के सेक्टर-II, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता- 700 091, फोन- 033-23591884-7. **गुजरात राज्य चैप्टर:** डॉ. के. रतिनम, अध्यक्ष; द्वारा एसएमसी डेयरी विज्ञान कॉलेज, आणंद कृषि विश्वविद्यालय, आणंद- 388110, गुजरात, ई-मेल: guptahk@rediffmail.com **केरल राज्य चैप्टर:** डॉ. एस.एन. राजाकुमार, अध्यक्ष, द्वारा प्रोफेसर व अध्यक्ष, केवासु डेरी प्लांट, मन्नुथी, ई-मेल: idakeralachapter@gmail.com **राजस्थान राज्य चैप्टर:** श्री ललित कुमार कौशिक, अध्यक्ष, द्वारा जयपुर डेयरी, गांधीनगर रेलवे स्टेशन के पास, जयपुर- 302015, टेलीफोन नं. 9549653400, फैक्स 0141-2711075, ई-मेल: idarajchapter@yahoo.com **पंजाब राज्य चैप्टर:** श्री इन्द्रजीत सिंह, अध्यक्ष; द्वारा निदेशक, डेरी विकास विभाग, पंजाब लाइवस्टॉक कॉम्प्लेक्स, चौथी मंजिल, आर्मी इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ के निकट, सेक्टर-68, मोहाली, फोन : 0172-5027285, ई-मेल: director_dairy@rediffmail.com **बिहार राज्य चैप्टर:** श्री एस.के. सिंह, अध्यक्ष, प्रबंध निदेशक, पटना डेयरी कार्यक्रम, वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, फीडर बैलेन्सिंग डेयरी कॉम्प्लेक्स, फुलवारीशरीफ, पटना-01505. ई-मेल: sudhirpdp@yahoo.com **हरियाणा राज्य चैप्टर:** करनाल, (हरियाणा) **तमिलनाडु राज्य चैप्टर:** डॉ. सी. नरेश कुमार, अध्यक्ष, द्वारा प्रोफेसर एवं प्रमुख (सेवानिवृत्त), डेयरी विज्ञान विभाग, मद्रास पशुचिकित्सा कॉलेज, चेन्नई-600 007. **आंध्र प्रदेश राज्य चैप्टर:** श्री के. भास्कर रेड्डी, अध्यक्ष, प्रबंध निदेशक, क्रीमलाइन डेयरी प्रॉडक्ट्स लिमिटेड, 6-3-1238/बी/21, आसिफ एवेन्यू, राज भवन रोड, सोमाजीगुड़ा, हैदराबाद-500 082. फोन: 040-23412323, फैक्स: 040-23323353. **पूर्वी यूपी स्थानीय चैप्टर:** प्रोफेसर डी.सी. राय, अध्यक्ष, प्रोफेसर, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रमुख, पशुचिकित्सा एवं प्रौद्योगिकी, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005, फोन: 0542-6701774/2368583, फैक्स: 0542-2368009, ई-मेल: dcrai.bhu@gmail.com

अध्यक्ष की बात,
आपके साथ

दूध—सर्वोत्तम और संपूर्ण आहार



प्रिय पाठकों,

बीती 1 जून को भारत सहित पूरे विश्व में 'विश्व दुग्ध दिवस' मनाया गया। इस अवसर पर आईडीए के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और इसकी क्षेत्रीय शाखाओं तथा चैप्टर्स में अनेक आयोजन किये गये, जिनमें बड़ी संख्या में डेरीकर्मियों, डेरी वैज्ञानिकों, डेरी किसानों और अन्य संबंधितों ने भागीदारी की। भारत सरकार ने भी एक समारोह का आयोजन करके देश में डेरी के विकास और भारतीय समाज में दूध के महत्व पर जोर दिया। इसकी विस्तृत रिपोर्ट आगे के पृष्ठों पर दी जा रही है। विश्व स्तर पर इस वर्ष 72 देशों में विश्व दुग्ध दिवस से संबंधित 586 आयोजन किये गये। विश्व दुग्ध दिवस के अधिकारिक पोर्टल पर पंजीकृत आयोजनों की संख्या है, वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक हो सकती है। यह विश्व दुग्ध दिवस की लोकप्रियता इस तथ्य से आंकी जा सकती है कि इन समारोहों का आयोजन डेरी किसानों, सहकारी संगठनों, डेरी एसोसिएशनों से लेकर डेरी कंपनीज, डेरी उद्यमियों और हजारों परिवारों और नागरिकों ने किया। इन आयोजनों में विश्व दुग्ध दिवस की मुख्य थीम के अनुसार सबने अपने दिन की शुरुआत दूध का गिलास हाथ में उठाकर की।

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) ने सन् 2001 में विश्व दुग्ध दिवस मनाने की पहल की थी और पूरे विश्व से इस आयोजन को समारोहपूर्वक करने की अपील भी की थी। इस आयोजन का उद्देश्य डेरी किसानों की आर्थिक समृद्धि और विकास तथा आजीविका को सतत् बनाने में डेरी सैक्टर के योगदानों को मान्यता प्रदान करना है। साथ ही एफएओ विश्व भर में यह संदेश भी देना चाहता है कि स्वस्थ जीवन के लिए दूध और दूध उत्पादों का सेवन आवश्यक और महत्वपूर्ण है। अपने अनेक पौष्टिक घटकों और अनेकानेक पोषणिक लाभों के कारण दूध मानव शरीर की वृद्धि और विकास की मूलभूत आवश्यकता और आधार है। इसलिए दूध को अकसर संपूर्ण आहार भी कहा जाता है। डेरी सैक्टर दुनिया के लगभग एक अरब लोगों की आजीविका का स्रोत है।

वैश्विक स्तर पर दूध को अत्यंत स्वास्थ्यवर्धक आहार के रूप में मान्यता प्राप्त है। प्रकृति ने दूध को अनेक लाभकारी पोषणिक घटकों से समृद्ध बनाया है, इसमें प्रमुख हैं उत्तम प्रोटीन; स्वास्थ्यकर लिपिड; खनिज जैसे कैल्शियम, मैग्नीशियम, जिंक, फॉस्फोरस, आयोडीन, पोटेशियम, विटामिन ए, डी, ई एवं के, रिबोफ्लेविन, थायमिन; विटामिन बी-12; प्रोटीन और लैक्टोस। दूध की प्रोटीन में अनेक आवश्यक अमीनो अम्ल विद्यमान होते हैं, जो पेशियों के ऊतक को बनाने और सुदृढ़ करने में काम आते हैं और हार्मोनल तथा मेटाबोलिक प्रक्रियाओं को संचालित करने में सहायक होते हैं। दूध का पर्याप्त मात्रा में सेवन करने से 'बॉडी मास' बढ़ता है, प्रतिरक्षा प्रणाली सशक्त होती है और हड्डियों के घनत्व में भी वृद्धि होती है। दूध में उपस्थित वसा को अत्यंत उत्कृष्ट माना जाता है क्योंकि यह ऊर्जा का समृद्ध स्रोत है, आवश्यक वसीय अम्लों और वसा घुलनशील विटामिन की आपूर्ति करता है और इसमें 'एंटी-ऑक्सीडेंट' गुण भी पाये जाते हैं। दूध की वसा दूध को एक आकर्षक सुवास देती है और आंतों में मौजूद लाभदायक बैक्टीरिया की वृद्धि को बढ़ावा देती है। इससे पाचन में सुधार के साथ भोजन में मौजूद पोषक तत्वों का अवशोषण भी सुधरता है। खाद्य पदार्थों से होने वाली एलर्जी को रोकने में भी इसे सहायक माना गया है। विश्व दुग्ध दिवस पर आयोजित किये जाने वाले जागरूकता कार्यक्रमों में दूध के इन लाभों के प्रसार से बहुत बड़ी आबादी को लाभ पहुंचता है।

आज विश्व में दूध का उत्पादन लगभग 826 मिलियन मीट्रिक टन आंका गया है, जिसमें दो प्रतिशत वार्षिक की दर से वृद्धि हो रही है। विश्व में लगभग 150 मिलियन परिवार दूध उत्पादन का काम कर रहे हैं। भारत तथा अन्य विकासशील देशों में दूध उत्पादन का कार्य मुख्य रूप से छोटे और सीमांत किसानों तथा भूमिहीन मजदूरों द्वारा किया जाता है। इससे परिवार की आजीविका सुरक्षित होती है और आमदनी में वृद्धि होती है। साथ ही खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा भी मजबूत होती है। दूध की बिक्री में अपेक्षाकृत तेज भुगतान के कारण, दूध का व्यवसाय छोटे उत्पादकों के लिए दैनिक आमदनी का अच्छा स्रोत है।



परंतु विश्व की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि के कारण दूध का सतत और आर्थिक रूप से लाभदायक उत्पादन एक चुनौती के रूप में उभर रहा है। यदि अनुमान के अनुसार सन् 2025 में धरती पर जनसंख्या 7.8 अरब का आंकड़ा पार करती है तो हमें 900 मिलियन टन दूध की आवश्यकता होगी। हमारे लिए गर्व की बात है कि भारत विश्व में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक है और दूध के वैश्विक उत्पादन में लगभग 18 प्रतिशत का बड़ा योगदान करता है। इस समय हमारे देश का वार्षिक दूध उत्पादन लगभग 165.4 मिलियन टन है, जिसे सन् 2022 तक 200 मिलियन टन तक पहुंचाने की योजना और लक्ष्य है। देश में प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता 355 ग्राम है, जो विश्व के औसत से अधिक है।

हाल के दशकों में विश्व के कुल दूध उत्पादन में विकासशील देशों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है। यह एक आशाजनक तथ्य है, परंतु इसका कारण पशुओं की संख्या में वृद्धि है ना कि प्रति पशु उत्पादकता में वृद्धि। डेरी विकास की योजनाओं और कार्यक्रमों में हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रति पशु उत्पादकता बढ़े और इसके लिए कुछ महत्वपूर्ण आयामों पर प्राथमिकता के साथ सुधार का काम करना होगा, जैसे आहार की निम्न गुणवत्ता, रोगों का प्रकोप, बाजार और सेवाओं तक सीमित पहुंच और डेरी पशुओं की निम्न आनुवंशिक क्षमता। संतोष का विषय है कि भारत सरकार द्वारा इन पहलुओं पर अनेक योजनाओं के माध्यम से सुधार कार्य शुरू किया गया है।

लोगों की बढ़ती आमदनी, आहार संबंधी आदतों में बदलाव और बढ़ती जनसंख्या के कारण अनुमान है कि देश में सन् 2022 तक दूध और दूध उत्पादों की मांग 210 मिलियन टन तक पहुंच जाएगी। यानी पांच वर्षों में कुल 36 प्रतिशत की वृद्धि करनी होगी, 5.5 प्रतिशत की वार्षिक दर से। ऐसे में यह तथ्य संतोष देता है कि वर्ष 2014-15 और 2015-16 में दूध उत्पादन की वृद्धि दर क्रमशः 6.2 प्रतिशत और 6.3 प्रतिशत रही, जो निर्धारित आवश्यकता से कुछ अधिक है। इसके लिए देश के मेहनती दूध उत्पादकों को बधाई।

विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर मैं यह बात जोर देकर कहना चाहूंगा कि दुनिया भर में कुछ ऐसे समूह हैं जो अपने स्वार्थवश दूध और दूध उत्पादों के उपभोग को ठेस पहुंचाने का काम कर रहे हैं। ये समूह बिना किसी वैज्ञानिक साक्ष्य के दूध के विरुद्ध दुष्प्रचार करते हैं कि इसके सेवन से रोग पनपते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि असंतुलित और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भोजन, शारीरिक निष्क्रियता, तंबाकू का उपभोग और अल्कोहल का सेवन अधिकांश रोगों का कारण हैं। दूध से जुड़ी अनेक गलत धारणाओं को तुरंत मिटाने की जरूरत है। ऐसा ही एक निराधार विवाद ए-1 और ए-2 दूध को लेकर है। अमेरिका और युरोप के लोग सदियों से मुख्य रूप से ए-1 दूध का सेवन कर रहे हैं, ठीक उसी तरह जैसे हम भारत में पिछले 50 वर्षों से संकर गाय का दूध पी रहे हैं, जिससे हमारे स्वास्थ्य को कोई नुकसान भी नहीं पहुंचा है।

मुझे यह बताते हुए हर्ष है कि विश्व दुग्ध दिवस के आयोजनों में दूध के असाधारण लाभों से जुड़े अनेक पहलुओं के प्रति लोगों को जागरूक किया गया। परंतु आवश्यक है कि हम इस कार्य को वर्ष भर करें, विश्राम ना दें। एक बार पुनः आप सबको विश्व दुग्ध दिवस के आयोजनों से जुड़ने के लिए धन्यवाद और बधाई।

घनश्यामसिंह राजौरिया

(घनश्याम सिंह राजौरिया)

इंडियन डेरी एसोसिएशन

संस्थागत सदस्य

बेनीफैक्टर सदस्य

अहमदाबाद जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर (राजस्थान)

अमृत फ्रेश प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

आयुर्वेद लिमिटेड (दिल्ली)

आरोहण डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, तंजावुर (तमिलनाडु)

बीएआईफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)

बनासकांठा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पालनपुर (गुजरात)

बड़ौदा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

बेनी इमपेक्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ, भीलवाड़ा (राजस्थान)

बिमल इंडस्ट्रीज, यमुना नगर (हरियाणा)

बोवियन हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)

ब्रिटानिया डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

सीपी दुग्ध और खाद्य उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

क्रीमी फूड्स लिमिटेड (दिल्ली)

डेयरी क्राफ्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

डेनफोस इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

डेयरी विकास विभाग टीवीएम, तिरुवनंतपुरम (केरल)

देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद डीयूएसएस लिमिटेड, बेगूसराय (बिहार)

डोडला डेयरी लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

द्वारका मिल्क एंड मिल्क प्रोडक्ट्स लिमिटेड, नवी मुंबई (महाराष्ट्र)

इली लिली एशिया इंक, बेंगलुरु (कर्नाटक)

एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

फार्मगेट एगो मिल्क प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

किसान प्रशिक्षण केन्द्र, डेयरी विकास, रांची (झारखंड)

खाद्य और बायोटेक इंजीनियर्स (I) प्राइवेट लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)

फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिस्कोरिटी, आणंद (गुजरात)

फॉटेरा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

गरिमा मिल्क एंड फूड्स प्रोडक्ट्स लिमिटेड (दिल्ली)

गोविंद दुग्ध और दुग्ध उत्पाद लिमिटेड, सतारा (महाराष्ट्र)

गोमा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे (महाराष्ट्र)

गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड, आणंद (गुजरात)

जीआरबी डेयरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, होसुर (तमिलनाडु)

हेटसन कृषि उत्पाद लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

हसन दुग्ध संघ, हसन (कर्नाटक)

हेरिटेज फूड्स लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

हिंदुस्तान इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर (मध्य प्रदेश)

आईडीएमसी लिमिटेड, आणंद (गुजरात)

इग्लू डेयरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

आईटीसी फूड्स, बेंगलुरु, (कर्नाटक)

भारतीय संभार एवं सामग्री प्रबंधन रेल संस्थान (दिल्ली)

जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)

कान्हा दुग्ध परीक्षण उपकरण प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

कस्तूरबा जैव-उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

करनाल दुग्ध उत्पाद लिमिटेड (दिल्ली)

करीमनगर जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

कर्नाटक सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, बेंगलुरु (कर्नाटक)

खैबर एगो फार्म्स प्राइवेट लिमिटेड, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर)

खम्बेत कोठारी कैन्स एवं सम्बद्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, जलगांव (महाराष्ट्र)

क्वालिटी डेयरी इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली (दिल्ली)

कोल्हापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (महाराष्ट्र)

कच्छ जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कच्छ (गुजरात)

लार्सन एंड टूब्रो इन्फोटेक लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

मध्य प्रदेश राज्य सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, भोपाल (मध्य प्रदेश)

मालाबार क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कोझीकोड (केरल)

मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (बिहार)

एनसीडीएफआई, आणंद (गुजरात)

राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, आणंद (गुजरात)

भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, सोनीपत (हरियाणा)

संस्थागत सदस्य

नोवोजोइम्स दक्षिण एशिया प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु (कर्नाटक)
नाऊ टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
ओराना इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)
पायस मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)
पाली जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पाली (राजस्थान)
पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड, हरिद्वार (उत्तराखंड)
परम डेयरी लिमिटेड (दिल्ली)
पब्लिक प्रोक्योरमेंट ग्रुप (दिल्ली)
प्रभात डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
रायचूर बेल्लारी एवं कोप्पल जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, बेल्लारी (कर्नाटक)
राजस्थान सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)
राजस्थान इलेक्ट्रोनिक्स एवं इंस्ट्रुमेंट्स लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)
राजारामबापू पाटिल सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, सांगली (महाराष्ट्र)
आरपीएम इंजीनियरिंग (I) लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)
एसआर थोराट दुग्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
साबरकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, हिम्मतनगर (गुजरात)
सील्ड एयर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
श्राइबर डायनामिक्स डेयरीज लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
श्री भावनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
श्री गणेश एग्रो वेट कार्पोरेशन, नवसारी (गुजरात)
श्री विजयविशाखा दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)
श्री राजेश्वरी डेयरी उत्पाद उद्योग प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
स्टर्न इन्व्हेस्ट्मन्ट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
एसएसपी प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)
शिमोगा सहकारी दुग्ध उत्पादक सोसाइटीज संघ लिमिटेड, शिमोगा (कर्नाटक)
द पटियाला जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पटियाला (पंजाब)
द पंजाब राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, चंडीगढ़ (पंजाब)
द रोहतक सहकारी दुग्ध उत्पादक लिमिटेड, रोहतक (हरियाणा)
द रोपड़ जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, मोहाली (पंजाब)
द संगरूर जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (पंजाब)
उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)
उत्तर प्रदेश दीन दयाल उपाध्याय पशु विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय, मथुरा (उत्तर प्रदेश)

उमंग डेयरीज लिमिटेड (दिल्ली)
वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)
विरबैक ऐनीमल हैल्थ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
ज्यूजर इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
वार्षिक सदस्य
एबीटी उद्योग, कोयंबटूर (तमिलनाडु)
एबॉट हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
भरुच जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
बी.जी. चितले डेयरी, सांगली (महाराष्ट्र)
कोरोनेशन वर्थ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
सीएचआर हेन्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
ड्यूक थॉमसन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर (मध्य प्रदेश)
गोमती सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, अगरतला
आईसीएल प्रबंधन एवं व्यापार इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)
मिशेल जेनज़िक एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड, इटावा (उत्तर प्रदेश)
मॉडर्न डेयरीज लिमिटेड, करनाल (हरियाणा)
ऑटोकम्पू इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (नई दिल्ली)
पीएमएस इंजीनियर्स (इंटरनेशनल) सेवा (दिल्ली)
राजकोट जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
रेड काऊ डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, हुगली (पश्चिम बंगाल)
सह्याद्री कृषि उत्पाद और डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
संगम दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, गुंटूर (आंध्र प्रदेश)
शारदा डेयरी एवं खाद्य उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, रायपुर (छत्तीसगढ़)
साइटिफिक एंड डिजिटल सिस्टम्स (दिल्ली)
शेंदोंग बिहाई मशीनरी कंपनी लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)
श्री ममता दुग्ध डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, जालोर (राजस्थान)
श्रीचक्र दुग्ध उत्पाद एलएलपी (आंध्र प्रदेश)
सूरत जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
सुरेंद्रनगर जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, वाधवान (गुजरात)
तिरुवनंतपुरम क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (केरल)
विद्या डेयरी, आणंद (गुजरात)



देश भर में मनाया गया विश्व दुग्ध दिवस



इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय में 1 जून, 2018 को विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर विशेष चर्चा सत्र का आयोजन किया गया। आईडीए के अध्यक्ष डा. जी.एस. राजौरिया की अध्यक्षता में आयोजित इस सत्र में सहकारी दूध संघों, निजी क्षेत्र की डेरी, प्रतिष्ठित डेरी विशेषज्ञों और आईडीए के अधिकारियों ने भागीदारी की। डॉ. राजौरिया ने विश्व दुग्ध दिवस का महत्व बताते हुए कहा कि कुछ विशेष वर्ग के लोग अपने निजी हितों के कारण दूध और इसके उत्पादों के बढ़ते उपभोग के विरुद्ध प्रचार कर रहे हैं, लेकिन आईडीए में हम आम लोगों को दूध के लाभों के प्रति जागरूक करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसके लिए आईडीए के सभी सदस्यों को एकजुट होकर प्रेस व

मीडिया के माध्यम से प्रचार करना चाहिए। डॉ. राजौरिया ने सन् 2022 तक किसानों की आमदनी दुगुनी करने में डेरी की अहम भूमिका पर जोर दिया और कहा कि दूध की क्वालिटी को बेहतर बनाने के प्रयास भी होने चाहिए।

विशेषज्ञ प्रतिभागियों ने चर्चा के दौरान अनेक उपयोगी सुझाव दिये। विशेषज्ञों ने सलाह दी कि डेरी किसानों को स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित करना चाहिए ताकि दूध की गुणवत्ता में सुधार हो और उन्हें बेहतर कीमत मिले। ए-1 और ए-2 दूध के विवाद पर चर्चा के दौरान यह बात सामने आयी कि यह विवाद भी कुछ वर्ग के लोगों ने अपने निजी हितों को साधने के लिए खड़ा किया है। ये लोग ए-2 दूध को



विशेषज्ञों की भागीदारी

अधिक लाभकारी बताकर उपभोक्ताओं से मुंहमांगी कीमत वसूल रहे हैं, जबकि इसके लाभों के कोई प्रामाणिक वैज्ञानिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं। हम लोग वर्षों से भारतीय डेरियों का दूध पी रहे हैं, जिसमें सभी तरह के दूध मिले होते हैं, लेकिन इससे हमारे स्वास्थ्य को किसी तरह का कोई नुकसान सामने नहीं आया है। बादाम, सोयाबीन, नारियल आदि से प्राप्त होने वाले

पेय उत्पादों को 'दूध' की संज्ञा देना गलत है, इससे भ्रम होता है। विशेषज्ञों ने कहा कि नर बछड़ों के जन्म को सीमित करने के लिए 'सेक्सड सीमेन' तकनीक और एआई के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए। गाय की देसी नस्लों के आनुवंशिक लक्षणों और आर्थिक खूबियों का वैज्ञानिक रिकॉर्ड बनाकर रखा जाए और इनके जर्मप्लाज्म का संरक्षण हो। डेरी विशेषज्ञों का मानना था कि यदि पशुपालकों द्वारा प्रबंधन के वैज्ञानिक तौर-तरीके अपनाये जाएं और चयन आधारित प्रजनन हो तो दूध उत्पादन को कई गुना बढ़ाया जा सकता है। प्रतिभागियों ने जोर देकर कहा कि अब समय आ गया है कि भारत द्वारा श्वेत क्रांति के पूर्वी तथा मध्य भारत में प्रसार के गंभीर प्रयास किये जाएं। पशुओं को दिये जाने वाले पानी की गुणवत्ता में सुधार किया जाना चाहिए और देशी दवाओं के उपयोग द्वारा एंटीबायोटिक के उपयोग को सीमित करने की आवश्यकता है। डेरी विशेषज्ञों ने सुझाव दिया कि आईडीए डेरी, दूध और दूध उत्पादों से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर भारत सरकार को सलाह देने के लिए विशेषज्ञों के विशिष्ट दलों का गठन करे।



सेहत से भरा दूध का गिलास

कार्यक्रम के प्रारंभ में विश्व दुग्ध दिवस की थीम के अनुसार सभी प्रतिभागियों ने दूध के गिलास को उठाया और इसके सेवन का आनंद लिया।



केंद्रीय कृषि मंत्री द्वारा संबोधन और सम्मान

डेरी विकास के बढ़ते कदम

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने राजधानी दिल्ली के राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर में विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर एक भव्य आयोजन किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राधा मोहन सिंह, केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने सभा को संबोधित करते हुए डेरी किसानों की सराहना की, जिनके कारण हमारा देश दूध उत्पादन में दुनिया में शीर्ष पर है। उन्होंने बताया कि सरकार की किसान हितैषी योजनाओं और नीतियों के कारण वर्ष 2014-18 के दौरान दूध उत्पादन में 6.3 प्रतिशत वार्षिक की वृद्धि देखी जा रही है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हम प्रति पशु दूध उत्पादकता बढ़ाने के लिए बड़े प्रयास कर रहे हैं।



देशी नस्ल के गोपशुओं के संरक्षण पर जोर देते हुए उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत 20 गोकुल ग्रामों की स्थापना को मंजूरी दी गयी है, जिनमें से तीन ने कार्य करना शुरू कर दिया है। इसी तरह दो राष्ट्रीय कामधेनु प्रजनन केंद्र भी सक्रिय हो गये हैं। गोपशुओं के आनुवंशिक सुधार के लिए 26 सीमेन केंद्रों को मजबूत किया गया, जिससे सीमेन उत्पादन की क्षमता बढ़कर 150 मिलियन खुराक तक पहुंच गयी है। पांच हजार से अधिक एआई तकनीशियनों को प्रशिक्षित करके गांवों में तैनात भी किया गया है। पशुओं के स्वास्थ्य स्तर की जांच के बाद नकुल स्वास्थ्य

पत्र दिये जाने की भी पहल की गयी है। ई-पशु हाट पोर्टल पशुओं और सीमेन की ऑन-लाइन खरीद-बिक्री का आकर्षक प्लेटफार्म बन गया है और बड़ी संख्या में पशुपालक इसका लाभ उठा रहे हैं।

केंद्रीय मंत्री ने बताया कि डेरी उद्यमिता विकास योजना के अंतर्गत डेरी यूनिट्स लगाने के लिए सब्सिडी दी जा रही है, जिसका अब तक 6.60 लाख लाभार्थी फायदा उठा चुके हैं। इसी तरह 10,841 करोड़ रुपये के डेरी प्रसंस्करण और बुनियादी विकास फंड का लक्ष्य 50,000 गांवों के 95 लाख दूध उत्पादकों को लाभ पहुंचाना है।



एनडीडीबी द्वारा आणंद में विश्व दुग्ध दिवस का आयोजन

इसके अंतर्गत दूध प्रसंस्करण और दूध शीतलन क्षमता का विस्तार किया जाना भी तय है। दूध में मिलावट की जांच के लिए भी अभियान चलाया जा रहा है।

इस अवसर पर पशुपालन, डेरी एवं मात्स्यिकी विभाग तथा डेरी से जुड़े अन्य विभागों व संस्थानों के अधिकारी तथा बड़ी संख्या में डेरी विशेषज्ञ भी उपस्थित थे। केंद्रीय मंत्री ने उत्कृष्ट योगदानों के लिए व्यक्तियों व संस्थाओं को सम्मानित भी किया।

डेरी सहकारिता को सम्मान

आणंद में नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड (एनडीडीबी) ने विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर एक भव्य पुरस्कार समारोह का आयोजन किया, जिसमें श्री परषोत्तम रूपाला, केंद्रीय राज्य मंत्री, कृषि एवं किसान कल्याण तथा पंचायती राज मंत्रालय मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर डेरी सहकारिताओं और महिला प्रसार कर्मियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि डेरी सहकारिताओं ने डेरी उद्योग के विकास में अहम भूमिका निभाई है, जिसके कारण डेरी किसानों की आजीविका को मजबूत आधार मिला है। उन्होंने कहा कि डेरी सहकारिता को अधिक तेजी से कदम बढ़ाते हुए संगठित क्षेत्र में दूध उत्पादन व

प्रसंस्करण की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है। केंद्रीय राज्य मंत्री ने एनडीडीबी की डेरी सहकारिताओं को सम्मानित करने की पहल की सराहना की।

मुख्य अतिथि ने देश में उत्कृष्ट डेरी संस्थानों को 21 एनडीडीबी इनोवेशन पुरस्कारों से सम्मानित किया और 12 महिला डेरी प्रसार कर्मियों को भी पुरस्कृत किया गया। साथ ही 56 अन्य महिला डेरी प्रसार कर्मियों को भी सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि ने एनडीडीबी द्वारा विकसित 'पशुपालन निर्देशिका' का लोकार्पण किया और एआई पर तैयार की गयी एक विडियो फिल्म तथा दूध व दूध उत्पादों के उपभोग को बढ़ावा देने वाले टीवी कमर्शियल को भी जारी किया। इस अवसर पर राज्य सरकार के अनेक मंत्री तथा सांसद भी उपस्थित थे।

एनडीडीबी के अध्यक्ष श्री दिलीप रथ ने बताया कि देश में पहली बार डेरी में इनोवेशन को सम्मानित किया जा रहा है और इससे डेरी विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। उन्होंने एनडीडीबी की अनेक नयी पहलों की जानकारी भी दी। श्री रथ ने बताया कि एनडीडीबी अनेक संबंधित संस्थानों व विभागों के साथ भागीदारी करके देश में डेरी विकास की अलख जगा रहा है। श्री रथ ने एनडीडीबी द्वारा प्रति पशु उत्पादकता बढ़ाने के प्रयासों की भी जानकारी दी।

(प्रस्तुति : जगदीप सक्सेना)

लाभकारी



गाय का गोबर भी मूल्यवान

रूपसी तिवारी¹, अमनदीप सिंह² तथा त्रिवेणी दत्त³

1. प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, एटिक,
2. शोध छात्र, प्रसार शिक्षा विभाग,
3. संयुक्त निदेशक (शैक्षणिक)

भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली, उत्तर प्रदेश – 243122

कृषि, ऊर्जा संसाधन, पर्यावरण संरक्षण और चिकित्सा के क्षेत्र में व्यापक अनुप्रयोगों के कारण गाय के गोबर का बहुत महत्त्व है। गाय का गोबर रोगाणुरोधी गुणों के कारण अन्य पशुओं के गोबर से बेहतर है। यह सूक्ष्म जीवों को नष्ट कर देता है जो रोग, किण्वन और अव्यवस्था का कारण बनते हैं। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि गाय का ताजा गोबर शुद्ध होता है। हमारे शास्त्रों में वर्णित गाय का गोबर समृद्धि का निश्चित संकेत है और दीपावली का अगला दिन गोबर-धन पूजा के रूप में मनाया जाता है। गाय के गोबर की कई विशेषताएं तथा उपयोगिताएं हैं, जिन्हें बताया जा रहा है।

पारंपरिक उपयोग

फर्श और दीवारों को लीपना

मिट्टी और पानी के साथ मिश्रित कर गाय के गोबर को मिट्टी के घरों में फर्श और दीवारों को लीपने के काम में लाया

जाता है। यह मिट्टी की चिकनाहट को कम कर फिसलन को कम करता है तथा मिट्टी की पानी अवशोषण क्षमता में सुधार करता है। इसे मिट्टी के साथ मिश्रित कर मिट्टी की झोपड़ियों के लिए प्लास्टरिंग के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। खाना पकाने की जगह, हवन कुंड, हवन प्लेटफार्म, मिट्टी

के घर, फर्श, दीवारों, इत्यादि पर गोबर की पतली कोटिंग रोगानुरोधक सतह प्रदान करती है। यह जाना-माना तथ्य है कि गाय के गोबर के साथ लीपी हुई मिट्टी की झोपड़ियों से कीड़े और सांप, छिपकली दूर रहते हैं। यही कारण है कि ग्रामीण इलाकों में लोग अभी भी अनाज को कीड़ों से मुक्त रखने के लिए गाय के गोबर और मूत्र से लीप कर बड़े मिट्टी के बर्तनों में अनाज जमा करते हैं।

ईंट में उपयोग

मिट्टी और गाय के गोबर की राख एक साथ सीमेंट की तरह व्यवहार करते हैं। विघटन के प्रतिरोध के साथ-साथ यह अच्छी इन्सुलेशन भी प्रदान करती है। इन्ही ईंटों से अनाज सुरक्षित रखने के लिए बर्तन भी तैयार किये जाते हैं।

ईंधन

गोबर से बने उपलों का ग्रामीण रसोई में महत्वपूर्ण उपयोग है। उपलों में आलू की भुनाई को अभी भी बिजली के ओवन के मुकाबले अच्छा माना जाता है। पारंपरिक ज्ञान कहता है कि गोबर के उपलों को जलाने पर तापमान एक निश्चित बिंदु से आगे नहीं बढ़ता, अतः ताप सुनिश्चित होने से भोजन में पोषक तत्व नष्ट नहीं होते। इसके अलावा, गोबर का धुआं रोगाणुओं को खत्म करके हवा को साफ करता है। हालांकि जलाने के अलावा गाय गोबर के कई अन्य फायदेमंद उपयोग हैं और हमें इस संसाधन को जलाने से बचना चाहिए।

मच्छर एवं मक्खी रोधी

गोबर को जलाने पर निकले धुएं से मच्छरों को दूर रखा जा सकता है। पानी और ताजा गाय के गोबर के मिश्रण के साथ प्रतिदिन फर्श को पोंछने की पारंपरिक भारतीय गांव प्रणाली से ज्ञात होता है कि मक्खियों को दूर रखने के लिए भी यह प्रभावी है।

पौधों की ग्राफिटिंग में उपयोग

गाय के गोबर का प्रभावी रूप से पौधों के ग्राफ्टों को उनके अंकुरण के लिए सील करने में उपयोग किया जाता

है। गाय के गोबर का पारंपरिक रूप से गुलाब उत्पादकों द्वारा नए लगाए गए गुलाब ग्राफ्ट को सील करने के लिए उपयोग किया जाता है। कुछ गन्ना उत्पादन क्षेत्रों में, गन्ने की अंकुरित पौध को सील करने में भी इसका उपयोग किया जाता है। यह कार्य गाय के गोबर के कीट नियंत्रण गुणों के कारण किया जाता है।

गाय के गोबर की राख का उपयोग

गोबर की राख का उपयोग ग्रामीण इलाकों में छोटे पैमाने पर सब्जी उत्पादन में कीटनाशक के रूप में सब्जियों पर हमला करने वाली कीड़ों की रोकथाम के लिए किया जाता है क्योंकि गोबर की राख कीटों को दूर रखने में सक्षम होती है। इसके साथ राख में कुछ महत्वपूर्ण खनिज तत्व भी होते हैं जिससे मिट्टी का उपजाऊपन बढ़ता है। गाय के गोबर की राख का उपयोग करके बर्तनों को साफ किया जा सकता है। यह तेल और वसा को अवशोषित करता है। गोबर की राख बर्तनों के लिए एक बहुत अच्छा सफाई विकल्प है और कई प्रकार के रसायनों के उपयोग से बचा सकता है जो अवशिष्ट प्रभाव छोड़ते हैं। गाय के गोबर की राख अभी भी ग्रामीण परिवारों में बर्तनों की सफाई के लिए प्रयोग की जाती है।

आधुनिक उपयोग

गोबर गैस संयंत्र (बायो-गैस)

गोबर को बायो-गैस (मीथेन) का उत्पादन करने और उपभोक्ता उपयोग के लिए बिजली उत्पन्न करने के लिए सफलतापूर्वक उपयोग किया गया है। घरों और सड़कों में प्रकाश के लिए तथा खाना पकाने में बायो-गैस का प्रयोग किया जाता है। इसका उपयोग बिजली के उत्पादन के लिए जेनरेटर चलाने के लिए, स्वयं-दहन इंजन चलाने के लिए किया जा सकता है। स्लरी (अवशेष) का उपयोग खाद के रूप में किया जा सकता है, जो फसलों के लिए एक उत्कृष्ट उर्वरक के रूप में कार्य करती है। बायो-गैस के लिए गोबर और खाद के लिए इसकी स्लरी नवीकरणीय खाना पकाने की ऊर्जा और फसलों के लिए उर्वरक प्रदान



गोबर से बायोगैस उत्पादन

कर रही है। पहाड़ी क्षेत्रों में जहाँ रसोई गैस पहुंचाना संभव नहीं होता, वहां गोबर गैस संयंत्र लगाकर स्वच्छ ऊर्जा से खाना पकाया जा सकता है।

उर्वरक

गाय का गोबर सबसे अच्छे उर्वरकों में से एक है। कंपोस्टिंग (सड़ाने) से इसे और भी शक्तिशाली उर्वरक बनाया जा सकता है। गाय के गोबर में 3 प्रतिशत नाइट्रोजन, 2 प्रतिशत फॉस्फोरस और 1 प्रतिशत पोटेशियम (एनपीके 3-2-1) होता है जो फसल के विकास और अनाज उत्पादन के लिए पर्याप्त है। गोबर से बनी खाद मिट्टी से एस्केरीचिया कोलाई जैसे रोगजनक कीटाणु तथा हानिकारक अमोनिया गैस को भी हटा देती है। यह मिट्टी से जंगली घास को भी हटा देती है और मिट्टी के लिए कार्बनिक पदार्थों को महत्वपूर्ण मात्रा में जोड़ती है। यह मिट्टी की नमी धारण क्षमता को भी बढ़ाती है तथा सिंचाई व्यवस्था को सक्षम बनाती है। गोबर से बनी खाद मृदा में हवा के आवागमन में सुधार करती है और मिट्टी को तोड़ने में मदद करती है। गाय के गोबर से बनी खाद में कुछ फायदेमंद कीटाणु होते हैं, जिनमें पोषक तत्वों को आसानी से सुलभ रूपों में परिवर्तित करने की प्रवृत्ति होती है।

जैविक खेती

गोबर, मूत्र और वनस्पति अपशिष्ट का प्रयोग करके विभिन्न प्रकार के जैव उर्वरकों को कंपोस्ट और वर्मीकल्चर

विधि से बनाया गया है। गाय के गोबर से बनी खाद में रोगाणुरोधक क्षमता होती है। डाइजेस्टर सभी कीड़ों को मार देता है तथा गोबर को कीट-मुक्त खाद में बदल देता है। 15 किलो वजन वाले बायो-मास के साथ 1 किलो गाय के गोबर तथा 15 किलो खेत की मिट्टी का उपयोग करके, 30 किलो अच्छी खाद बनायी जा सकती है। इस अभ्यास को राष्ट्रीय ग्रामीण तथा कृषि विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा भी अनुमोदित किया गया है। गाय के गोबर से बना हुआ वर्मीकम्पोस्ट पौधे के लिए बेहतर विकास सुनिश्चित करता है।

बंजर मिट्टी का संवर्धन

मिट्टी की एक परत को ताजे गाय के गोबर या कंपोस्टिंग के बाद मिट्टी में मिश्रित करके फैलाने से बंजर मिट्टी में सुधार होता है। समुद्र के पानी और खमीर के साथ गाय के गोबर का उपयोग मिट्टी में सुधार के लिए एक तरल उत्प्रेरक के रूप में किया गया है। दावा किया जाता है कि यह अपर्याप्त भूमि को हरित करने में सक्षम है। इससे न केवल अच्छी खाद बनायी जाती है, बल्कि धरती में मूल्यवान जीव जैसे केंचुए भी निश्चित रूप से उत्पन्न होते हैं जो सभी माध्यम से काम करते रहते हैं। पंचगव्य के साथ बायो-गैस स्लरी का संयोजन, मिट्टी के स्वास्थ्य, उत्पादकता और फसलों की गुणवत्ता पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। रासायनिक उर्वरक की तुलना में, जो लंबे समय तक भूमि को नुकसान पहुंचाते हैं, गाय का गोबर वास्तव में मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करता है।

बीज रक्षक

रोपण से पहले गोबर में बीज को कवर करना कीटों से बचाने में मदद करता है। यह मिट्टी के लिए एक उत्कृष्ट कंडीशनर है और बीज और मिट्टी की जल धारण क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है।

गोबर से कागज तैयार करना

गाय के गोबर की उच्च फाइबर सामग्री गोबर से कागज बनाने में इसे सक्षम बनाती है। गोबर से फाइबर निकालने के लिए गोबर को अत्याधुनिक तकनीक द्वारा

गाय के गोबर के चिकित्सीय उपयोग

कुचले हुए नीम के पत्तों के साथ मिश्रित करके गाय के गोबर को त्वचा पर लगाने से यह फोड़े और गर्मी द्वारा हुए चकत्तों के लिए अच्छा है। ताजा मक्खन के साथ मिश्रित गाय का गोबर अभी भी रोगी की छाती पर खांसी को रोकने के लिए तथा घुटने पर दर्द निवारण के लिए लगाया जाता है। एक अध्ययन यह दर्शाता है कि आम जनसंख्या की तुलना में डेरी किसानों में फेफड़ों के कैंसर के विकसित होने की संभावना पांच गुना कम है। बीमारी की बढ़ती घटनाओं के कारण इस तरह के अध्ययन क्रांतिकारी हो सकते हैं।

गाय के मूत्र, दूध, गोबर, घी और दही के संयोजन को "पंचगव्य" कहते हैं। संस्कृत में इन सभी पांच उत्पादों को एकल रूप से "गव्य" कहा जाता है और सामूहिक रूप से पंचगव्य कहा जाता है। आयुर्वेद तथा प्राचीन भारतीय चिकित्सा प्रणाली में विभिन्न मानव रोगों के उपचार में गाय के दूध, दही, घी, मूत्र के महत्व का विस्तृत उल्लेख है। पंचगव्य से उपचार शक्तिशाली एंटीकैंसर और एंटीवायरल प्रतीत होते हैं और शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत करते हैं। पंचगव्य शरीर से जहरों को हटाने में सक्षम है तथा इसे शराब, तंबाकू और वायुमंडलीय प्रदूषण के दुष्प्रभावों का इलाज करने में उपयोग किया जाता है।

आयुर्वेद में बहुत अधिक दवाओं को उनके उपयोग से पहले शुद्ध किया जाना चाहिए। इस तरह के शुद्धिकरण केवल गोबर द्वारा किये जा सकते हैं। आयुर्वेदिक प्रणाली (भस्मों की तरह) की कुछ हर्बल दवाइयां धीमी जलते हुए गाय के गोबर के उपले पर तैयार की जानी चाहिए अन्यथा जड़ी-बूटी के औषधीय गुण खो जाते हैं। इन सबके अलावा गाय के गोबर का उपयोग वन मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए किया जाता है जिसमें कई आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियां पनपती हैं।

धोया जाता है और फिर कागज बनाने के लिए स्क्रीन पर दबाया जाता है।

गर्मी का स्रोत

गाय का गोबर स्वाभाविक रूप से गर्म होता है और कम्पोस्ट खाद को भी गर्म बनाता है। इससे पानी को गर्म करने के लिए ग्लास हाउस में रख कर पानी की पाइप को इसके बीच से निकाला जा सकता है।

पी-एच बैलेंसर

गाय के गोबर को तालाब में डाला जाता है और यह एसिड को निष्क्रिय करता है। इसलिए जब आवश्यक हो तो पानी के अम्लीय पीएच को बफर करने के लिए मछली के तालाबों में इसका उपयोग किया जा सकता है।

मछलियों की फीड

मछली पालन में गाय के गोबर का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है। गोबर को तालाब में डालने से न सिर्फ यह मछलियों की फीड के रूप में कार्य करता है बल्कि तालाब की सेहत के लिए जरूरी अन्य पौधों के विकास में लाभदायक सिद्ध होता है।

जलशोधक

गाय के गोबर में प्राकृतिक एंटीसेप्टिक गुण होते हैं और पानी को शुद्ध करने के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है।

पर्यावरण संरक्षण

गाय के 1 किलो गोबर से 250 ग्राम बायोगैस पैदा की जा सकती है जो हमें हजारों पेड़ों को काटने और जलाने से बचाने में मदद करती है और इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण प्रदान करती है। गाय के गोबर से बने उर्वरक मिट्टी, पानी और हवा के लिए प्रभावी प्रदूषण नियंत्रकों के रूप में कार्य करता है। वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चलता है कि सौर विकिरण के लिए गोबर प्रतिरोधी पाया गया है। गोबर को मृत जानवरों के सींग में भर कर इन्हें सर्दियों से पहले भूमिगत किया जाता है और शरद ऋतु में उन्हें बाहर निकाला जाता है। इस समृद्ध गोबर के 25-30 ग्राम को 10 लीटर जल के साथ मिलाया जाता है और खेतों में छिड़काया जाता है जिससे अच्छा परिणाम मिलता है।

दुधारू पशुओं को खनिज मिश्रण दें, दूध उत्पादन बढ़ाएं

डा. पंकज कुमार सिंह¹ एवं डा. पल्लव शेखर²

1. सहायक प्राध्यापक (पशुपोषण विभाग), 2. सहायक प्राध्यापक (पशु औषधि विभाग),
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना, बिहार-800014

पशुओं के शरीर में 3-5 प्रतिशत खनिज पदार्थ पाए जाते हैं जो हड्डियों को मजबूत करने, तंतुओं का विकास करने, पाचन शक्ति बढ़ाने, खून बनाने, दूध उत्पादन, प्रजनन एवं स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। कैल्शियम, फास्फोरस, मैग्नीशियम, सल्फर, सोडियम, पोटेशियम, क्लोरीन, आयरन, तांबा, जिंक, मैंगनीज, कोबाल्ट, आयोडीन जैसे खनिज लवण पशुओं के लिए आवश्यक हैं। आमतौर से ये तत्व पशुओं को आहार से प्राप्त हो जाते हैं। परंतु सही मात्रा में अतिरिक्त खनिज तत्व आहार में देने से पशु स्वस्थ रहते हैं और उनमें सामान्य बढ़वार होती है। साथ ही दूध उत्पादन सामान्य रहता है। खनिज मिश्रण व नमक से इन तत्वों की पूर्ति की जा सकती है।

पशु शरीर में आवश्यक खनिज लवण विभिन्न तरीके से कार्य करते हैं। कैल्शियम, फास्फोरस तथा मैग्नीशियम हड्डी तथा दांतों के निर्माण में सहायक होते हैं। कैल्शियम एवं फास्फोरस की कमी से बच्चों में रिकेट्स एवं व्यस्कों में ऑस्टोमेलेशिया नाम की बीमारी हो जाती है। दुधारू पशुओं में ब्याने के बाद कैल्शियम की कमी से दुग्ध ज्वर (मिल्क फीवर) हो जाता है। दुग्ध ज्वर अधिक दूध देने वाली गायों व भैंसों में पाया जाता है। यह पशु के ब्याने के 3 से 7 दिनों के बीच अधिक दुग्ध स्रवण होने के कारण होता है। इस रोग का मुख्य कारण गर्भावस्था के समय आहार में कैल्शियम की कमी होती है। दुधारू पशुओं में दूध का कैल्शियम अधिक स्रावित होता है, जिसके कारण दूध देने वाले पशुओं में रक्त में कैल्शियम की कमी हो जाती है।

रिकेट्स कैल्शियम की कमी से छोटी उम्र के पशुओं में होने वाला रोग है। यह रोग कैल्शियम, फास्फोरस तथा विटामिन-डी की अल्पता के कारण होता है। गाय-भैंसों के

बच्चों के पैरों में विकृति, चाल में कड़ापन, पैरों के जोड़ों में सूजन आ जाना तथा कड़ापन उभरना, इसके लक्षण हैं। यह ज्यादातर अगले पैरों के जोड़ों में होता है। चाल में लंगड़ापन के साथ पशुओं में ज्यादा बैठने की आदत विकसित हो जाती है। जानवर कमर से झुक जाता है तथा अस्थि भंग होने की सम्भावना ज्यादा हो जाती है। इसके अलावा दांत भी देर से निकलते हैं तथा कैल्शियम की कमी से टेढ़े-मेढ़े, छोटे गड्ढे तथा दांतों पर मटमैला रंग आ सकता है। दांतों के साथ ही जबड़ों की हड्डी मुलायम तथा मोटी हो जाती है। यदि समय पर उचित उपचार नहीं किया गया तो पशु का विकास रुक सकता है या मृत्यु भी हो सकती है।

अस्थि मृदुता यानी ऑस्टोमेलेशिया रोग कैल्शियम की कमी से बड़ी उम्र के पशुओं में होती है। यह बीमारी गर्भवती मादाओं या अधिक दूध देने वाले पशुओं में ज्यादा होती है। जब पशु को पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम तथा



खनिज मिश्रण से स्वास्थ्य लाभ

फास्फोरस आहार से नहीं मिल पाता है तो गर्भ में विकसित होने वाले भ्रूण तथा दूध देने वाले पशुओं में रक्त में यह तत्व हड्डियों से आते हैं, जिससे कि हड्डी कमजोर होने लगती है। कैल्शियम एवं फास्फोरस की कमी से पशुओं की प्रजनन क्षमता कम हो जाती है एवं मादा बांझपन का शिकार हो जाती है। रिकेट्स तथा ऑस्टोमेलेशिया रोगों के उपचार तथा रोकथाम के लिए पशुओं को उचित मात्रा में कैल्शियम तथा फास्फोरस देना चाहिए। आहार में लाइम स्टोन का चूर्ण, हड्डी का चूरा, गेहूँ का चोकर व हरी घास को नियमित रूप से देना चाहिए। पशुओं को 50-100 ग्राम तक खनिज मिश्रण दिया जा सकता है। कैल्शियम एवं फास्फोरस के स्रोत चोकर, खली, संक्रमण रहित हड्डी का चूर्ण एवं डाइ कैल्सियम फासफेट इत्यादि हैं। पशु आहार में कैल्शियम एवं फास्फोरस का अनुपात 2:1 होना चाहिए। यदि दोनों के अनुपात में अन्तर अधिक होता है तो विटामिन-डी की आवश्यकता बढ़ जाती है।

फास्फोरस तथा मैग्नीशियम खनिजों की कमी वाले आहार देने से पशु की प्रजनन क्षमता कम हो जाती है। कई बार तो फास्फोरस की कमी बनी रहने के कारण मादा बांझ

भी हो सकती है। यदि फास्फोरस के साथ ऊर्जा, प्रोटीन, विटामिन-ए एवं जिंक की कमी होती है तो यह गड़बड़ी और भी प्रबल हो सकती है। पशु यदि गर्भधारण कर भी लेता है तो कैल्शियम, फास्फोरस तथा मैग्नीशियम की कमी के कारण बच्चे की हड्डियां विकसित न होने के कारण गर्भ टिक भी नहीं पाता है और यदि टिक भी गया तो विकसित नहीं हो पाता है।

पशुओं में मैग्नीशियम की कमी से मैग्नीशियम टिटनी नामक रोग होता है। यह गाय-भैंस के दूध पीते बच्चों में ज्यादा पाया जाता है। इस बीमारी से ग्रसित बूढ़े जानवरों में मृत्यु दर ज्यादा होती है। शरीर को लौह की आवश्यकता होती है। शरीर में उपस्थित लौह की लगभग 60 प्रतिशत मात्रा हीमोग्लोबिन में पायी जाती है। मायोग्लोबिन में भी लौह एक अनिवार्य घटक है। इनके अतिरिक्त यह कई हीमप्रोटीन और फ्लेवोप्रोटीन उत्प्रेरक में भी सक्रिय कार्य करता है। शरीर में लोहे की कमी से कई प्रकार की अल्परक्तता (एनीमिया), शारीरिक वृद्धि में गिरावट तथा अल्परक्तता से मृत्यु तक हो जाती है। ताँबा हीमोग्लोबिन संश्लेषण में उत्प्रेरक का कार्य करता

है तथा शरीर की क्रियाओं को सुचारु रूप से चलाने के लिए जरूरी है। ताम्रहीनता से शरीर में अस्थिभंग, खुर की सड़न/परजीवियों के प्रकोप में वृद्धि तथा प्रतिरोधक क्षमता का कमी दिखायी देती है।

जीवनी क्रियाओं में सुचारु संचालन हेतु आयोडीन का एक अनिवार्य खनिज है, जिसकी पूर्ति आहारिय आयोडीन तथा आयोडीन युक्त आहार पूरकों से की जाती है। शरीर में विभिन्न क्रियाकलापों को चलाने के लिए जस्ते की आवश्यकता होती है। जस्ते की कमी से पशुओं में पैराकिरोटोसिस रोग हो जाता है। इसके कारण पैरो के जोड़ों में दर्द होता है और पशुओं की चाल में अकड़न आ जाती है। दुधारु पशुओं में दूध उत्पादन घट जाता है तथा प्रजनन संबंधी विकृतियाँ जैसे अनिश्चित मदकाल, जेर अवरोध तथा दुर्बल बच्चों का जन्म होता है। जस्ताहीनता को दूर करने के लिए मिश्रित दाने में जस्ता युक्त खनिज लवण मिश्रण मिलाना चाहिए।

खनिज मिश्रण खिलाने से लाभ

उच्च गुणवत्ता तथा सही मात्रा में खनिज मिश्रण खिलाने से कई लाभ होते हैं :

- दूध उत्पादन में वृद्धि।
- नर और मादा पशुओं की प्रजनन क्षमता में सुधार।
- बछड़ों की शारीरिक विकास दर में सुधार, जिससे वे शीघ्र वयस्क होते हैं।
- दो ब्यांतों के बीच समयावधि में कमी।
- पशु आहार उपभोग एवं पाचन क्रिया में सुधार।
- बेहतर शारीरिक प्रतिरोधक क्षमता।
- स्वस्थ व सबल बछड़े-बछियों का जन्म।
- पशुओं के सामान्य स्वास्थ्य में सुधार।
- क्षेत्र विशेष का खनिज मिश्रण खिलाने पर कम खर्च और अधिक प्रभावी।

खनिज तत्वों के स्रोत

- फलीदार चारों में जैसे बरसीम, रिजका में कैल्शियम की काफी मात्रा होती है।
- चोकर और चावल की भूसी से फास्फोरस मिल जाता है।
- आहार में 2 प्रतिशत खनिज लवण मिश्रण व 1 प्रतिशत नमक मिलायें।

दूध में मिलावट की जांच-घर पर



आवधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

निदेशक,
एसआईएआर-एनडीआरआई,
करनाल

ई-मेल: dir@ndri.res.in
dir.ndri@gmail.com

दूरभाष: 01-184-2252800/
2259002 (का.)

फैक्स: 01-184-2250042

परीक्षण के लिए विकसित टेस्ट

- ✓ न्यूट्रालाइजर
- ✓ यूरिया
- ✓ हाइड्रोजन पेराक्साइड
- ✓ रलूकोज
- ✓ माल्टोडक्स्ट्रीन
- ✓ सुक्रोज

दूध में मिलावट की जांच

रिट्रिप्स व्यावसायिक रूप से उपलब्ध हैं

डेलमोस रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड
एसआईएनईडी-टीबीआई बिल्डिंग
एनडीआरआई, करनाल-132001
(हरियाणा)

मोबाइल नं० - 9205727761
ई-मेल: marketing@delmosresearch.com

मास्कडनूप-राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल की डेयरी विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किए गए परीक्षण टेस्ट विकसित की गई है। इससे दूध में 0.01 प्रतिशत माल्टोडक्स्ट्रीन की उपस्थिति का भी पता लगाया जा सकता है। यह ज्ञान प्रत्यक्ष और रिट्रिप्स व्यावसायिक परीक्षण, दूध में तैली से 3 सामान्य मिलावट जैसे, न्यूट्रालाइजर, यूरिया, हाइड्रोजन पेराक्साइड, रलूकोज, माल्टोडक्स्ट्रीन और सुक्रोज इत्यादि का पता लगाने में सक्षम है। परीक्षण करने के लिए रिट्रिप्स को दूध में डुबो दिया जाता है या दूध को एक बूब को रिट्रिप्स पर डाला जाता है और तत्काल रिट्रिप्स के रंग में बदलाव दिखाई देने से मिलावट का पता लगता है। केवल 10 मिनट में ही परिणत स्तर पर नमूने का परीक्षण किया जा सकता है।

(मासिक वेबटैट कावचन संख्या - 3472 डीएन/2013, 2019 डीएन/2014)

संदर्भ के लिए रंगीन तालिका



विचार कथाएं

अध्यापन

कसबे की सरकारी पाठशाला में अध्यापक माता प्रसाद कक्षा पांच के छात्रों को संत कबीर का यह दोहा पढ़ा रहे थे – “ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय। औरन को शीतल करै, आपहु शीतल हो” अर्थात् मान और अहंकार का त्याग करके ऐसी वाणी में बात करें जो औरों के साथ-साथ स्वयं को भी शीतलता यानी शांति देती हो।

अभी वे इसके बाद वाला दोहा पढ़ाने वाले थे कि उनकी नजर कमरे के कोने में बैठे भीकन लाल पर पड़ी जो बाजू में बैठे उस्मान को कुछ पकड़ा रहा था। वे तपाक से उनकी तरफ मुखातिब होते हुए गुस्से में बोले, “उल्लू के पट्टों, चलो फटाफट कक्षा से बाहर निकलो। मैं पढ़ा रहा हूँ और तुम आपसी लेनदेन में लगे हो।”

सार्वजनिक प्याऊ

मई दिवस के अवसर पर मजदूरों की बस्ती में एक सार्वजनिक निःशुल्क प्याऊ लगाया गया। प्याऊ का उद्घाटन उस क्षेत्र के जाने-माने नेता और वर्तमान प्रदेश सरकार में समाज कल्याण मंत्री ने फीता काटकर किया। उन्होंने आम लोगों के लिए स्वच्छ पेय जल उपलब्ध कराने के अपने संकल्प को दोहराते हुए कहा कि इस प्याऊ को उन्होंने अपने विधायक निधि के पैसों से बनाया है।

खैर, प्याऊ के उद्घाटन के बाद मंत्री जी ने अपने साथ आए सभी कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि वे अब प्याऊ के पानी को वहां एकत्रित सभी लोगों को पिलाएं। फिर उन्होंने अपने पीए को आदेश दिया कि वह कार में से उनकी मिनरल वाटर की बोतल फटाफट ले आए। कुछ देर बाद लोग प्याऊ का और मंत्री जी मिनरल वाटर पी रहे थे।

आत्मचिंतन

दिन भर राघव जी बेचैन रहे। सुबह जब उनका बेटा अपने ऑफिस के लिए घर से निकल रहा था, उन्होंने उसे पीछे से आवाज देते हुए कहा “अरुण बेटे, सुनो तो ! “अरुण ने बिना पीछे मुड़े जवाब दिया, “ पापा, अभी जल्दी में हूँ। जो भी बात है, आप रागिनी को बता देना।” ‘रागिनी अरुण की पत्नी है और आजकल वह हफ्ते भर के लिए अवकाश पर थी। राघव जी को अरुण का यह जवाब चुभ गया। वे सोचने लगे-काश, आज अरुण की माँ होती तो मैं अपना सुख-दुःख उनसे बाँट लेता लेकिन वह तो मुझे अकेला छोड़ हमेशा के लिए चली गई। खैर, इन्हें छोड़कर मैं कहीं जा भी तो नहीं सकता।

बहरहाल, शाम को एक पुस्तक पढ़ते समय किसी सन्दर्भ में उन्हें वह वक्त याद आया जब अरुण किशोरावस्था में था और वे ऑफिस में एक बड़ी जिम्मेदारी वाले ओहदे पर थे। उन वर्षों के दौरान अनेक बार ऐसा हुआ जब उनके ऑफिस जाते वक्त अरुण उनसे कुछ बोलने की कोशिश करता तो वे भी अक्सर यही कहते थे – ‘अपनी मम्मी से जाकर बोलो मैं इस वक्त जल्दी में हूँ।’ अतीत के उन दिनों की याद आते ही राघव जी की सारी बेचैनी यकायक दूर हो गई। वे समझ गए कि “कभी गाड़ी पर नाव और कभी नाव पर गाड़ी” जीवन का एक कटु यथार्थ है।

सुभाष चंद्र लखेड़ा

सी-180, सिद्धार्थ कुंज, सेक्टर-7, प्लाट नंबर-17, द्वारका, नई दिल्ली – 110075

जुलाई

1

जुलाई के महीने में देश के ज्यादातर भागों में मानसूनी वर्षा होती है और कुछ क्षेत्रों में बरसात के साथ धूलभरी आंधी भी चलती है। ऐसे समय में पशुओं को मौसम में मौजूद नमी और गरमी के कारण कई रोग लग सकते हैं। इसलिए पशुओं को इस मौसम में होने वाले रोगों से बचाव के उपाय करने चाहिए।

पशुओं के बाड़े को या रहने की जगह को कीचड़ से बचाएं और बाढ़ आने की संभावना पर किसी पशुओं को ऊंची जगह पर ले जाएं।

2

3

यदि पशुओं को अभी तक एफएमडी, हीमोरेजिक सेप्टीसीमिया, ब्लैक क्वार्टर, एंटेरोटॉक्सीमिया आदि रोगों का टीका नहीं लगा है तो इस समय जरूर लगवाएं।

ज्यादा बरसात की दशा में पशुओं को डिवर्म करना आवश्यक है। पशुओं के नवजात शिशुओं को ब्याने के दो घंटे के भीतर खीस (कोलोस्ट्रम) पिलाएं।

4

5

ब्याने के 7–8 दिन बाद दुधारू पशुओं को मिल्क फीवर लगने की संभावना होती है। इस रोग से बचाने के लिए गर्भावस्था के दौरान पशुओं को पर्याप्त धूप में रखें।

गर्भावस्था के आखिरी महीने में पशु को विटामिन-ई और सीलीनियम का इंजेक्शन लगवाएं, इससे पशु की प्रसव के समय होने वाली अनेक समस्याओं से बचाव होता है। या पशु को हर दिन 5–10 ग्राम चूना या कैल्शियम और फॉस्फोरस का 70–100 मिलीलीटर मिश्रण दिया जा सकता है।

6

7

गर्मी के लंबे मौसम के बाद मानसूनी बरसात से चारा वाली फसलों में अचानक तेज बढ़वार होती है, इससे उनमें जहरीला सायनाइड पनपने की संभावना होती है। इसलिए पशुओं को ऐसे चारागाहों में चरने के लिए ना छोड़ें, विशेषरूप से ज्वार की फसल में। चारा फसलों की समय से पहले कटाई ना करें या पशुओं को ना खिलायें।

इस महीने बहुवर्षीय चारा घासों की रोपाई करें, जो 40–50 दिन में कटाई के लिए तैयार हो जाएंगी। संतुलित पशु आहार के लिए मक्का, ज्वार और बाजरा को ग्वार और लोबिया के साथ बोएं।

8

2018

क कैलेंडर

अगस्त

1

पशुओं को सीधी धूप और अधिक गर्मी से बचाने की व्यवस्था करें। अगर जुलाई के लिए बताये गये टीकों को अभी तक नहीं लगवाया है तो इस महीने यह काम जरूर करें।

2

एफएमडी से ग्रस्त पशुओं को अलग बाड़े में रखें ताकि स्वस्थ पशुओं का संक्रमण से बचाव हो सके। यदि क्षेत्र में एफएमडी का प्रकोप है तो अपने पशुओं को बचा कर रखें।

3

यदि मां को एफएमडी रोग हुआ हो तो उसकी संतान को उसका दूध ना पीने दें। इससे उनका हृदय प्रभावित हो सकता है और मृत्यु भी हो सकती है। रोगी पशुओं के खुर, मुंह और थन को 1 प्रतिशत पोटैशियम परमैंगनेट के घोल से धोकर साफ करना चाहिए।

4

चरागाहों से मृत पशुओं के शव को जल्दी से जल्दी हटा देना चाहिए अन्यथा बोटुलिज्म फैलने का खतरा होता है।

5

पशुओं को बाह्य-परजीवियों से बचाने के उपाय करें। पशुओं के बाड़े/आवास/क्षेत्र को साफ-सुथरा रखें। बाड़े में निरगुंडी, तुलसी या लेमन ग्रास की पत्तियों का गुच्छा बांध दें, इसकी महक से बाह्य परजीवी बाड़े में नहीं घुसते। या लेमन ऑयल से बने जर्मनाशी के इस्तेमाल से भी बाड़े को स्वच्छ रखा जा सकता है।

6

मानसून के दौरान पशुओं के बाड़े को सूखा रखें। मक्खियों को दूर रखने के लिए बाड़े में नीलगिरि या लेमन ग्रास के तेल का छिड़काव करें।

7

दुधारू पशुओं को उनके आहार के साथ प्रतिदिन 30-50 ग्राम खनिज मिश्रण भी दें। इससे दूध उत्पादकता बढ़ती है और पशुओं की प्रतिरक्षा शक्ति में भी वृद्धि होती है।

सौजन्य

पशुपालन, डेरी और मात्स्यिकी विभाग
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

‘दुग्ध सरिता’ के सदस्य बनें घर बैठे पत्रिका पाएं



इंडियन डेरी एसोसिएशन
का प्रकाशन

दुग्ध सरिता

(द्विमासिक पत्रिका)

अंकों की संख्या : 6

वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 450/-

कीमत रु. 75/- प्रति अंक

साधारण डाक से निःशुल्क डिलीवरी, कोरियर या
रजिस्टर्ड डाक का शुल्क रु. 40/- प्रति अंक

दुग्ध सरिता : देश में डेरी सेक्टर का विकास आईडीए का मिशन है और इसके लिए हिंदी भाषा में डेरी किसानों को लक्ष्य करते हुए इस द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है। यह पत्रिका डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों की एक बड़ी मांग और जरूरत पूरी करती है। ‘दुग्ध सरिता’ डेरी किसानों की समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित है और संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करती है।

‘दुग्ध सरिता’ की 4,000 या अधिक प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसे सहकारी समितियों और निजी डेरी सेक्टर के संस्थागत सदस्यों सहित आईडीए के सभी सदस्यों, शैक्षणिक संस्थानों और सभी संबंधित सरकारी विभागों को प्रेषित किया जा रहा है। इसके माध्यम से नई तकनीकों, सर्वोत्तम दूध प्रक्रियाओं, डेरी प्रसंस्करण और आधिक दूध उत्पादन सहित सभी पहलुओं पर जानकारी प्रदान की जा रही है। ‘दुग्ध सरिता’ में लेख, समाचार व विचार, केस स्टडीज, सफलता गाथाएं, फोटो फीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी। इसका उद्देश्य डेरी पशुओं के पालन से लेकर दूध उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण तथा बिक्री के सभी आयामों को शामिल करते हुए डेरी किसानों और डेरी व्यवसाय को प्रगति तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है।

आईडीए द्वारा ‘इंडियन डेरीमैन’ और ‘इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस’ नामक दो अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है, जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं।

सदस्यता फॉर्म

हाँ, मैं सदस्य बनना चाहता हूँ :

दुग्ध सरिता विवरण...../एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष/प्रतियों की संख्या

(कृपया टिक करें)

पत्रिका भेजने का पता (अंग्रेजी में लिखें तो कैपिटल लैटर प्रयोग करें)

संस्थान / व्यक्ति का नाम.....

संपर्क व्यक्ति का नाम व पदनाम (संस्थान सदस्यता के लिए).....

पता.....

शहर.....

राज्य.....पिन कोड.....ई-मेल.....

फोन.....मोबाइल.....

संलग्न बैंक ड्राफ्ट/स्थानीय चेक (ऐट पार) नं.....

बैंक.....इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली को देय

एनईएफटी विवरण (ट्रांसैक्शन आईडी.....तारीख.....राशि.....)

(हस्ताक्षर)

कृपया इस फॉर्म को भरकर डाक से भेजें या ई-मेल करें।

सेक्रेटरी (एस्टेबलिशमेंट), इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सेक्टर-IV आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022

फोन : 26179781, 26170781 ईमेल : dsarita.ida@gmail.com वेबसाइट : www.indairyasso.org

एनईएफटी विवरण : खाता नाम : इंडियन डेरी एसोसिएशन बचत खाता संख्या : 90562170000024 आईएफएससी : SYNB0009009

बैंक : सिंडिकेट बैंक ; शाखा; दिल्ली तमिल संगम बिल्डिंग, सेक्टर V आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022

बकरी का दूध, बहुत खूब

वीना एन. और ए.के. पुनिया

डेरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय

गुरु अंगददेव पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

लुधियाना, पंजाब - 141004

हमारे देश में अक्सर बकरी को 'गरीब की गाय' कहा जाता है। कारण यह कि कम लागत के बावजूद बकरी पालन परिवार की आजीविका को मजबूत करता है और इसका दूध मानव पोषण की अनेक आवश्यकताओं को पूरा करता है। भारत के पशुपालन के परिदृश्य में बकरी का अहम स्थान है और देश की अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान है। आइए, जानते हैं बकरी के दूध की खूबियों को।

बकरी और गाय के दूध के बीच अनेक समानताएं हैं और कुछ महत्वपूर्ण अंतर भी हैं, जो इसे खास बनाते हैं, गुणकारी बनाते हैं। अपने विशेष भौतिक-रासायनिक गुणों के कारण बकरी के दूध की पचनीयता गाय या मनुष्य के दूध से अधिक होती है, जो इसे बच्चों तथा रोगियों के लिए अधिक अनुकूल बनाता है। बकरी के दूध में अनेक चिकित्सीय गुण भी देखे गये हैं।

विशेष संरचना, विशेष गुण

बकरी और गाय के दूध की औसत संरचना के बीच अधिक अंतर नहीं है। औसतन बकरी के दूध में 12.2 प्रतिशत कुल ठोस पाये जाते हैं, जिसमें 3.8 प्रतिशत वसा, 3.5 प्रतिशत प्रोटीन, 4.1 प्रतिशत लैक्टोस और 0.8 प्रतिशत राख मौजूद होती है। इसमें गाय के दूध की तुलना में अधिक वसा और राख पायी जाती है, जबकि लैक्टोस की



मात्रा कम होती है। इसी तरह बकरी के दूध में गाय के दूध की अपेक्षा दस आवश्यक अमीनो अम्ल में से छह की मात्रा अधिक होती है। बकरी के दूध में कैल्शियम, फास्फोरस, पोटैशियम, मैग्नीशियम और क्लोरीन की मात्रा अधिक होती है, जबकि सोडियम और सल्फर की कम।

इसी तरह सीलीनियम और विटामिन-ए की मात्रा भी अधिक है। जबकि रिबोफ्लेविन, विटामिन बी-12, फोलेट और पैंटोथीनेट की मात्रा गाय के दूध से कम होती है।

बकरी के दूध में वसा की गोलिकाओं (ग्लोब्यूलस) का आकार छोटा होने से इसकी पचनीयता अधिक होती है और वसा का चयापचय (मेटाबोलिज्म) भी अधिक कुशलता से होता है। कुछ विशेष वसीय अम्लों की मात्रा अधिक होने के कारण इसकी वसा को अनेक रोगों के उपचार में लाभकारी पाया गया है, जैसे

‘मालएक्सॉर्पशन सिंड्रोम’, आंत की गड़बड़ियां, हृदय संबंधी रोग, अपरिपक्व शिशुओं का पोषण, सिस्टिक फाइब्रोसिस और अग्न्याशय की पथरी की समस्या। बकरी के दूध की अधिक बफरिंग क्षमता इसे गैस्ट्रिक अल्सर के उपयोग में लाभकारी बनाती है। बकरी के दूध में लैक्टोस की मात्रा कम होने से यह उन व्यक्तियों के लिए उपयोगी है, जो लैक्टोस असह्यता (इनटॉलरेंस) की समस्या से पीड़ित हैं। बकरी के दूध से एलर्जी की संभावना भी कम होती है, इसलिए शिशु आहार बनाने में इसकी विशेष उपयोगिता है। खून की कमी (एनीमिया) से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए बकरी का दूध विशेष रूप से उपयोगी है, क्योंकि यह लौह की जैव उपलब्धता को बढ़ा देता है। बकरी के दूध से जिंक के स्तर में भी सुधार होता है। बकरी का दूध डेंगू के रोगियों के लिए विशेष रूप से लाभकारी पाया गया है, क्योंकि इसके सेवन से शरीर में प्लेटलेट की संख्या तेजी से बढ़ती है और यह शरीर में द्रव-संतुलन को भी सुधारता है। बकरी के दूध में एंटीऑक्सीडेंट गुण भी मौजूद हैं।

बढ़ती लोकप्रियता

इन खूबियों के कारण बकरी के दूध और इससे बने उत्पादों का प्रचलन तथा लोकप्रियता बढ़ रही है। इससे फंक्शनल फूड बनने लगे हैं, जो वृद्धजनों के लिए विशेष रूप से लाभकारी होते हैं। आजकल बकरी के दूध से चीज़, बटरमिल्क, योगर्ट, आइसक्रीम, मक्खन, मिठाइयां और टॉफी जैसे उत्पाद भी बनने लगे हैं। बकरी के दूध से कई प्रकार के चीज़ बनाये जाते हैं, जो अपनी विशेष सुवास और स्वाद के कारण लोकप्रिय हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि बकरी के दूध और इसके उत्पादों के प्रति जागरूकता जगाकर इसे अधिक लोकप्रिय बनाया जाए। भारत जैसे विकासशील देश में बकरी का दूध विशेषरूप से गरीब आबादी में व्याप्त कुपोषण और रोगों की रोकथाम में सहायक हो सकता है।

(हिंदी प्रस्तुति : संपादकीय डेस्क)

‘दुग्ध सरिता’ का अभियान, संपन्न बनें डेरी किसान

लेखकों से निवेदन

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा लोकप्रिय द्विमासिक पत्रिका ‘दुग्ध सरिता’ के प्रकाशन का शुभारंभ एक अभियान के रूप में किया गया है। इसका उद्देश्य नयी जानकारियों और उपयोगी सूचनाओं को डेरी किसानों, डेरी उद्यमियों तथा डेरी व्यवसायियों तक पहुंचाकर उनकी सकल आमदनी को बढ़ाना तथा डेरी सैक्टर का विकास करना है। यदि आप डेरी वैज्ञानिक, डेरी किसान, डेरी उद्यमी, डेरी सहकारिता या डेरी सैक्टर से जुड़े हैं तो हमारा अनुरोध है कि ‘दुग्ध सरिता’ में अपना लेखकीय योगदान देकर हमारे अभियान में भागीदार बनें और उसे सफल बनाएं।

आप हमें जानकारीपूर्ण सचित्र लेख, अपने सकारात्मक अनुभव, सफलता की कहानियां, केस स्टडीज़ तथा अन्य उपयोगी जानकारी प्रकाशन के लिए भेज सकते हैं। बस गुजारिश सिर्फ इतनी है कि यह सामग्री सरल और सहज भाषा में तथा हमारे लक्ष्य वर्ग के लिए उपयोगी हो। हम अधिकतम 2,000 शब्दों तक की रचनाओं का स्वागत करते हैं और 500 शब्दों से कम के आलेखों को संक्षिप्त रूप में प्रकाशित करने की व्यवस्था है। आपके द्वारा भेजे गये आलेखों को तकनीकी मूल्यांकन के उपरांत प्रकाशित किया जाएगा और इस संबंध में संपादक मंडल का निर्णय अंतिम तथा अनिवार्य रूप से मान्य होगा। हमारे लिए आपका योगदान अमूल्य है, परंतु प्रकाशित रचनाओं पर एक सांकेतिक धनराशि मानदेय के रूप में प्रदान की जाती है। आपकी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

- कृपया अपनी रचनाएं कृतिदेव 016 फोंट में ई-मेल करें। हमारा ई-मेल पता है : dsarita.ida@gmail.com
- रचनाओं के साथ बेहतर गुणवत्ता के और सार्थक चित्रों को कैंप्शन के साथ .jpg फार्मेट में भेजें।



बरसात के मौसम में पशुपालन में सावधानियां

डा. राजेन्दर सिंह

वरिष्ठ विस्तार विशेषज्ञ (पशु विज्ञान), रोहतक

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

बरसात के मौसम में कई बार ऐसी स्थितियां हो जाती हैं जो पशु के स्वास्थ्य व उत्पादन को काफी प्रभावित करती हैं। पानी व नमी की अधिकता व वातावरण के अन्दर हवा की कमी का होना ऐसी प्रमुख दशाएं हैं। अगर हम बरसात के मौसम में भी पशुधन के रखरखाव के लिये उचित प्रबंध करें तो हम अपने पशुओं का उत्पादन बढ़ाकर 300 दिन तक एक दुधारू पशु से दूध प्राप्त कर सकते हैं तथा 12 से 14 महीने में एक बच्चा प्राप्त कर सकते हैं।

बरसात होने के बाद हमारे पास पशुओं के लिए काफी मात्रा में हरे चारे उपलब्ध हो जाते हैं जो पशु के खानपान के अन्दर किफायती होने के साथ पशुओं को प्रोटीन, खनिज तत्व, ऊर्जा व विटामिन प्रदान करते हैं। हरे चारे पशु को स्वस्थ रखने में व दूध उत्पादन तथा प्रजनन क्रिया को बढ़ाने में विशेष स्थान रखते हैं। परंतु बरसात के मौसम में कुछ विशेष सावधानियां अवश्य रखनी चाहिए।

- बासी व गंदा चारा-पानी पशुओं को नहीं खिलाना पिलाना चाहिए, इससे बदहजमी हो जाती है तथा

पेट में कीड़े हो जाते हैं जो पशु की बढ़वार, दूध उत्पादन व गर्भ पर बुरा असर डालते हैं।

- पशुओं के लिए बनाया गया संतुलित आहार (बाखर) व अन्य खिलाये जाने वाले पदार्थों को नमी के प्रभाव से बचाने के लिये जमीन से एक फुट ऊंचाई पर तथा दीवार से डेढ़ फुट दूरी पर सुरक्षित भंडारण करके रखना चाहिए। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो पशु चारे/संतुलित आहार में नमी की वजह से फफूंद लग जायेगी तथा

कड़वापन हो जायेगा जो पशु स्वास्थ्य के लिये बहुत हानिकारक है। इसके साथ विशेष ध्यान रखें कि इस मौसम में एक सप्ताह से ज्यादा समय से बना हुआ संतुलित आहार/पशु चारा पशुओं को नहीं खिलाना चाहिये।

- इस मौसम में फली वाले हरे चारे (8 से 10 प्रतिशत पशु शरीर के वजन का) के साथ सूखा चारा (2 से 3 प्रतिशत पशु शरीर के वजन का) भली प्रकार मिला कर हर वर्ग के पशु को खिलाना बहुत जरूरी है, अन्यथा पशुओं को अफारा व कब्ज हो सकती है। अफारा से बचाने के लिये बड़े वर्ग के पशु को तारपीन का तेल 60 ग्राम व सरसों का तेल 500 से 750 ग्राम के अनुपात में मिलाकर 5 से 7 दिन में जरूर पिलाना चाहिये तथा कब्ज से बचाने के लिये 500 से 700 मिली. सरसों के तेल के साथ 60 से 70 ग्राम मीठा सोडा या पैराफीन द्रव्य 500 से 1000 मिली. पिलाना चाहिए। अन्य वर्ग के पशुओं के लिये इसकी मात्रा पशु विशेषज्ञ की सलाह से पिलायें।
- यदि लंबे समय तक वर्षा ना हो और हरे चारे, विशेष तौर से ज्वार के खेत में पानी ना लगा हो तो इस प्रकार के ज्वार चारे को कम से कम एक सप्ताह बाद खिलाना चाहिए। ऐसा न करने से चारे में हाइड्रोसायनिक तेजाब (एच.सी.एन.) की मात्रा बढ़ जाती है जो पशु के लिये हानिकारक हो सकता है। कई बार पशु की मृत्यु तक हो जाती है तथा ऐसी स्थिति को देहात की भाषा में पशु की जीभ पर पत्ता लग गया कहते हैं।
- बरसात के मौसम में मुंह-खुर, गलघोटू विशेष तौर पर उन पशुओं में आ जाते हैं, जिनका बचाव के लिये टीकाकरण ना हुआ हो। इन रोगों से बचाव के लिये पशुपालन व डेरी विभाग, हरियाणा सरकार द्वारा बरसात के मौसम से पहले टीकाकरण अभियान चलाया जाता है तथा मुफ्त

में टीके लगाये जाते हैं। अगर आपने अभी तक अपने पशुओं को टीके नहीं लगवाये हैं तो उन्हें तुरन्त लगवा लें। यदि आपने कोई नया पशु खरीदा है तो उसे भी टीका अवश्य लगवा लें, नहीं तो आपके अन्य पशुओं में भी मुंह-खुर, गलघोटू बीमारी लग सकती हैं।

- बरसात के मौसम में पशुओं के खुरों की जांच करते रहें तथा 5 से 7 दिन में लाल दवाई (पोटेशियम परमैंगनेट) स्वच्छ गुनगुने पानी में मिलाकर साफ करते रहें।

दूर रहे मक्खी

इस मौसम में मक्खी व अन्य परजीवियों का अधिक मात्रा में होना स्वाभाविक है। ये पशु को बहुत परेशान करते हैं तथा पशु शरीर पर घाव कर देते हैं। मक्खी से बचाव के लिए पशुओं के ऊपर मच्छरदानी लगायें तथा अन्य परजीवों से बचाव के लिए दो मिली. बुटोक्स दवा 1 लीटर पानी में मिलाकर या हल्के अन्य कीटनाशकों का घोल छिड़कने से समस्या का हल हो जायेगा। परन्तु ध्यान रखें कि पशु दवा लगे शरीर को चाटने ना पाये अन्यथा नुकसान हो सकता है। शरीर के ऊपर घाव के उपचार के लिए घाव वाले स्थान को लाल दवा से धोकर बीटाडीन व अन्य मलहम पशु विशेषज्ञ की सलाह से लगायें।

- पशुओं का बीमा जरूर करवायें, इसमें पशु पालक के द्वारा केवल 25 प्रतिशत खर्च दिया जाता है तथा 75 प्रतिशत बीमे की राशि का खर्च सरकार द्वारा वहन किया जाता है। अनुसूचित जाति के सदस्यों के दो दुधारू पशुओं का बीमा बिल्कुल मुफ्त किया जाता है।
- इस मौसम में भैसों का ब्यांत शुरू हो जाता है तथा ब्याने से कम से कम 15 दिन पहले ब्याने वाले पशु को कब्ज व दस्त नहीं होना चाहिये। इसके लिए खासतौर से खानपान का विशेष ध्यान रखें तथा समस्या होने पर पशु विशेषज्ञ से सलाह प्राप्त कर अपने पशुधन का ध्यान रखें।

Vadilal[®]

PURE MILK PURE ICE CREAM

Occasionxx

अमेरिकन नट्स
आइसक्रीम टब

GOURMET

Super Premium Ice Cream

पिस्टैशीओ आलमंड फज



जम्बो
आइसक्रीम कप
कुकीज़ 'एन' क्रीम

1+1 आइसक्रीम पार्टी पैक
बादाम कार्निवल

Conditions apply

Creative visualisation only



www.vadilalicecreams.com

theointegrated.com 2939



पशुओं की दूध कम देने

यदि आपकी गाय या भैंस औसतन 10 से 15 किलो से कम दूध देती है, तो

कारण

पशुओं को केवल दो बार पानी पिलाना।

उपाय

पशुओं की पानी पीने की उचित व्यवस्था रखें ताकि वे अपनी सुविधा के अनुसार और मर्जी से पानी पी सकें।

कारण

पशुओं का सर्दी से बचाव न करना।

उपाय

पशुओं की रहने की जगह सर्दियों के लिए ठीक हो, ताकि उन्हें सर्दी में ठंडी हवाओं से बचाया जा सके।

कारण

पशुओं की पानी की नांद का गंदा होना और उसकी सतह पर हरी काई जमना।

उपाय

नांद की हमेशा सफाई करें। बनावट ऐसी हो कि कौनों में कुछ जमा ना हो, काई भी ना जमे। नांद की साइड्स पर चूने का लेप करते रहें। इससे कीड़े नहीं लगते और चूने का कैल्शियम पानी में घुलकर पशु को स्वस्थ रखता है।

कारण

पशुओं के गले में भारी सांकल लगाकर रखना। सांकल गर्मियों में बेहद गर्म और जाड़े में ठंडी हो जाती है, जिससे पशु को तकलीफ हो जाती है।

उपाय

कोशिश करें कि ऐसा ना किया जाए, ताकि पशु को दर्द या तकलीफ ना झेलनी पड़े।

कारण

पशुओं को खूंटे से बांधकर रखना।

उपाय

पशुओं को खुला रखें ताकि वे अपनी मर्जी से हिलडुल सकें, चल सकें और भूख लगने पर चारा खा सकें या प्यास लगने पर पानी पी सकें।

कारण

पशुओं के बैठने की जगह का पक्की या टूटी हुई ईंटों से बना होना।

उपाय

पक्की जगह पर पशु को बैठने में तकलीफ होती है, इसलिए बैठने का स्थान नर्म होना चाहिए। बैठने पर पशु को आराम मिलना चाहिए।

की समस्या का समाधान

आप आसान उपाय अपनाकर दूध उत्पादन को 25 से 30 प्रतिशत बढ़ा सकते हैं।

कारण

पशुओं के पेट में कीड़े होना व उन्हें दवाई न देना।

उपाय

पहले तो कीड़े होने की रोकथाम के उपाय करना। पेट में कीड़े होने पर समयानुसार कीड़े मारने की दवाई (डीवर्मर) देते रहना।

कारण

पशुओं को नहलाने व उसे साफ रखने की ओर ध्यान न देना।

उपाय

पशुओं को प्रतिदिन नहलाए व साफ रखें ताकि वे अच्छा महसूस करें।

कारण

पशुओं के चारा/भूसा रखने की जगह का साफ न होना और साफ न करना।

उपाय

सभी जगह जो पशु के चारे के लिए बनाई गई है उसे भी साफ करते रहना है। पुराना चारा अलग रखना है और नया चारा अलग।

कारण

पशुओं की चारा वाली खुरली का साफ ना होना, बनावट ठीक ना होना जिससे कोने में चारा फंस जाता है और बदबूदार हो जाता है। कीड़े पड़ जाते हैं, जिसकी वजह से पशु चारा ठीक तरह से नहीं खाता व कीड़े पशु के पेट में जाकर उसे बीमार कर देते हैं।

उपाय

खुरली की बनावट में ध्यान दें कि उसके कोने गोलाई लिए हुए हों, ताकि वहां कुछ जमे नहीं। दिन में दो बार, सुबह और शाम, खुरली की सफाई करें। पुराना चारा निकाल कर ही ताजा चारा डालें। इससे चारे की बर्बादी नहीं होगी। पशु चारा मन से खाएगा और बीमारी की संभावना भी खत्म हो जाएगी।

कारण

पशुओं के रहने की जगह का साफ व हवादार, छायादार न होना, जिससे मक्खी, मच्छर, चीचड आदि पशु के शरीर पर घाव कर देते हैं।

उपाय

पशु के रहने की जगह का वातावरण साफ, हवादार व छायादार हो।

श्री आर. के. छाबड़ा

अध्यक्ष, सिस्टम्स, सर्टिफिकेशन्स एंड
आडिट्स, क्वालिटी लिमिटेड
दिल्ली



गोचरभूमि की महत्ता

श्री गौरीशंकरजी गुप्त

वह भी एक युग था जब हमारे भारतवर्ष में गोचरभूमि की प्रचुरता थी और निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी गायें पाल सकता था। गोचरभूमि में चरने वाली गायें हरी घास व वनस्पति के प्रभाव से निरोग और हृष्ट-पुष्ट रहतीं और उनका दूध सुपाच्य तथा पुष्टिकारक होता था। उन गायों का मूत्र सर्व रोगों-विशेषकर उदर, नेत्र और कर्ण रोगों को समूल नष्ट करने की क्षमता रखता था। आज गोदुग्ध-गोमूत्रादि में वैसा चमत्कार न दीखने का यही मुख्य कारण है कि हमारे देश में गोचरभूमि की समुचित व्यवस्था नहीं है। पर वैदिक युग में गोचरभूमि का बड़ा महत्व था। ऋग्वेद (1/24/16) में एक मंत्र है जिसका भाव है कि गायें जिस तरह गोचरभूमि की ओर जाती हैं, उसी तरह महान् तेजस्वी परमात्मा की प्राप्ति की कामना करती हुई बुद्धि उसी की ओर दौड़ती रहे।

ईश्वर की ओर बुद्धि लगी रहे। यह भाव व्यक्त करने के लिए गायों के गोचरभूमि की ओर जाने का दृष्टान्त दिया गया है। इसी प्रकार ऋग्वेद (1/7/3) में दूसरा मंत्र है जिसका भाव यह है कि सुरपति इन्द्र ने दूर से प्रकाश दीख पड़े, इस हेतु सूर्य को द्युलोक में रखा और स्वयं गायों के संग पर्वत की ओर प्रस्थान किया। दूसरे शब्दों में गायों को चरने के लिए पर्वतों पर भेजना चाहिए। पर्वत भी गोचरभूमि की श्रेणी में आते हैं। पर्वतों पर गौओं को पर्याप्त चारा और जल तो सुलभ रहता ही है, उन्हें शुद्ध वायु और व्यायाम लाभ भी हो जाता है।

पद्यपुराण, मनु, याज्ञवल्क्य तथा नारद आदि स्मृतियों में गोचरभूमि के वर्णन का सारांश संक्षेप में यही है कि यथाशक्ति गोचरभूमि छोड़ने वाले को नित्य प्रति सौ से

अधिक ब्राह्मण भोजन कराने का पुण्य मिलता है और वह स्वर्ग का अधिकारी होता है। गोचरभूमि को रोकने या बाधा पहुंचाने वाले तथा वृक्षों को नष्ट करने वाले इक्कीस पीढ़ी तक नर्क में पड़े रहते हैं। चरती हुई गौओं को बाधा पहुंचाने वालों को समर्थ ग्रामरक्षक दण्ड दें, ऐसा पद्यपुराण में कहा गया है। जनक को चरती हुई गाय को रोकने के फलस्वरूप द्वार देखना पड़ा था। चरती गाय को ही क्या, आहार करते समय जीवमात्र को रोकना या मारना मनुष्यता नहीं है। धार्मिक दृष्टि से भी ऐसा करना अनुचित है।

पहले भी कहा गया है कि हमारे देश में गोचरभूमि की प्रचुरता थी। इतना ही नहीं, अपितु राजवर्ग तथा सामान्य वर्ग, दोनों की ओर से गोचरभूमि छोड़ी जाती थी। पुण्यलाभ दृष्टि से धर्मशाला, पाठशाला, कूप और तालाब आदि बनाने की प्रथा की भांति गोचरभूमि खरीदकर कृष्णार्पण करना उस युग की प्रथा थी। आज भी वे गोचरभूमियां विद्यमान हैं और उनके दानपत्रों में स्पष्ट अंकित हैं।

गांव के निकट चारों ओर चार सौ हाथ भूमि यानी फेंकने से लकड़ी जहां जाकर गिरे, वहां तक की भूमि यानी नगर के निकट चारों ओर तिगुनी भूमि यानी हाथ भूमि गोचरण के लिए छोड़ने का आदेश देते हुए कहते हैं कि उतनी भूमि के अंदर की किसी ऐसी जिसके चारों ओर बाड़ न हो, ग्राम के पशु नष्ट कर दे तो यह उनका उपराध नहीं और इसके लिए उनको राजदण्ड नहीं मिलना चाहिए (मनुस्मृति 8/237-238)।

महर्षि याज्ञवल्क्य का भी यही मत है। उन्होंने पर्वतों की तराई के गांवों के निकट आठ सौ हाथ तथा नगर के निकट सोलह सौ हाथ गोचरभूमि छोड़ने की व्यवस्था दी है। यह भी आदेश है कि खेत गांव तथा शहर से दूर हो खेतों में बाड़ घनी हो। बाड़ की ऊंचाई इतनी हो कि ऊंट की दृष्टि भी न पहुंच सके और न कुत्ते आदि ही उसके छिद्रों से किसी प्रकार अंदर की ओर कर सकें। नारदस्मृति के अनुसार बाड़ न लगाने के कारण खेती को यदि पशु चर जाएं या खेत में घुसें तो राजा पशुओं को दण्ड नहीं दे

सकता, वह उन्हें हंकवा सकता है। बाड़ तोड़कर यदि पशु कृषि को नष्ट करें तो वे अधिकारी होंगे।

मनु का भी यह कथन है कि राह के निकट या पड़ोस के बाड़ लगे खेतों में यदि पशु किसी प्रकार पहुंचकर अनाज खा जाए तो राजा पशुपालक पर सौ पण दण्ड लगाये। किन्तु यदि पशु बिना रखवाले का हो तो उसे सिर्फ हंकवा दे (मनुस्मृति 8/240)।

महर्षि याज्ञवल्क्य के वचनानुसार राह, ग्राम और गोचरभूमि के निकट के खेत को यदि रखवाले की अज्ञातवस्था में पशु नष्ट कर दे तो वह दोषी नहीं होगा। हां यदि खेत को रखवाला जान-बूझकर चरा दे तो वह अपराधी है और चोर की भांति उसे दण्ड मिलना चाहिए (याज्ञवल्क्य स्मृति 2/162)।

अन्त में एक अत्यंत रोचक और तथ्यपूर्ण प्रसंग उल्लेख्य है, जिससे गोचरभूमि हड़पने वाले नराधमों के पाप की भयंकरता पर प्रकाश पड़ता है। एक बार एक चाण्डाल की पत्नी चिताग्नि में नर-कपाल रखकर उसमें कौवे का मांस पका रही थी और उसको उसने कुत्ते के चमड़े से ढंक रखा था। एक व्यक्ति को यह देखकर स्वभावतः कौतूहल हुआ और उसने चाण्डालिनी से पूछा- 'तूने ऐसी घृणित चीज को भी क्यों ढंक रखा है ? उसने कितना मार्मिक उत्तर दिया था - 'मैंने इसे इस भय से ढंक रखा है कि मेरा यह स्थान खेतों के समीप है। यदि किसी ऐसे महापापी व्यक्ति की, जिसने गोचरभूमि को अपने खेत में मिला लिया है, दृष्टि पड़ जाएगी तो मेरा यह आहार ग्रहण करने लायक नहीं रह जाएगा।'

इस प्रकार हम देखते हैं कि गोचरभूमि छोड़ना महान् पुण्य और उसे नष्ट करने या हड़पना महापाप है। हमारे देश में गोवध की भांति गोचरभूमि भी एक समस्या के रूप में उपस्थित है। गोचरभूमि का हमारे यहां बड़ा अभाव है और उसकी बड़ी दुर्व्यवस्था है।

साभार: 'कल्याण पत्रिका', गोसेवा अंक (1995), गीता प्रेस, गोरखपुर ■

अजमेर डेरी में नये मिल्क प्रोसेसिंग प्लांट का भूमि पूजन



अजमेर डेरी में 145 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले दस लाख लीटर दूध क्षमता के नए प्रोसेसिंग प्लांट का 09 जून, 2018 को डेरी अध्यक्ष श्री रामचन्द्र चौधरी ने विधि-विधान से भूमि पूजन किया। यह प्लांट दिसंबर, 2019 में बनकर तैयार होगा। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष ने बताया कि इस प्रोसेसिंग प्लांट को दो भागों में बनाया जाएगा। पहले भाग में सिविल कार्य होगा, जिसकी कुल लागत 55 करोड़ रुपये आएगी। इसके बाद दूसरे चरण में मशीनरी कार्य किया जाएगा, जिसकी लागत 90 करोड़ रुपये होगी। इस प्रकार पूरे प्लांट की कुल लागत 145 करोड़ रुपये आएगी। उन्होंने बताया कि यह प्लांट ग्रीन बिल्डिंग पद्धति पर आधारित होगा। तीस बीघा जमीन पर बनने वाले इस प्लांट में सभी प्रकार की मशीनें आईडीएमसी कंपनी की लगेंगी, जो भारत सरकार का उपक्रम है। उपरोक्त दोनों कार्य नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड, आणंद के दिशा-निर्देशानुसार संपादित किया जाएगा। यह आधुनिक प्लांट दिसंबर, 2019 तक बनकर तैयार हो जाएगा। इस प्लांट के बन जाने से सरस के विभिन्न गुणवत्तापूर्ण उत्पाद उपभोक्ताओं को मिलेंगे।



श्री चौधरी ने एनडीडीबी की कार्यप्रणाली एवं पारदर्शी कार्यों की सराहना करते हुए बताया कि प्रोसेसिंग प्लांट की कुल लागत 307 करोड़ के लगभग आनी थी, लेकिन एनडीडीबी की ओर से किए गए पारदर्शी कार्यों के कारण इसकी कुल लागत लगभग 260-270 करोड़ रुपये हो गयी है। इससे डेयरी को 40 करोड़ रुपये का लाभ हुआ है।

कविता

समर शेष है*

रामधारी सिंह 'दिनकर'

ढीली करो धनुष की डोरी, तरकस का कस खोलो,
किसने कहा, युद्ध की वेला चली गयी, शांति से बोलो?
किसने कहा, और मत वेधो हृदय वह्नि के शर से,
भरो भुवन का अंग कुंकुम से, कुसुम से, केसर से?

कुंकुम? लेपूँ किसे? सुनाऊँ किसको कोमल गान?
तड़प रहा आँखों के आगे भूखा हिन्दुस्तान।

फूलों के रंगीन लहर पर ओ उतरनेवाले!
ओ रेशमी नगर के वासी। ओ छवि के मतवाले!
सकल देश में हालाहल है, दिल्ली में हाला है,
दिल्ली में रोशनी, शेष भारत में अंधियाला है।

मखमल के पर्दों के बाहर, फूलों के उस पार,
ज्यों का त्यों है खड़ा, आज भी मरघट-सा संसार।

अटका कहाँ स्वराज? बोल दिल्ली! तू क्या कहती है?
तू रानी बन गयी वेदना जनता क्यों सहती है?
सबके भाग्य दबा रखे हैं किसने अपने कर में?
उतरी थी जो विभा, हुई बंदिनी बता किस घर में

समर शेष है, यह प्रकाश बंदीगृह से छूटेगा
और नहीं तो तुझ पर पापिनी! महावज्र टूटेगा

समर शेष है, उस स्वराज को सत्य बनाना होगा
जिसका है ये न्यास उसे सत्वर पहुंचाना होगा
धारा के मग में अनेक जो पर्वत खड़े हुए हैं
गंगा का पथ रोक इन्द्र के गज जो अड़े हुए हैं

कह दो उनसे झुके अगर तो जग में यश पाएंगे
अड़े रहे अगर तो ऐरावत पत्तों से बह जाएंगे

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध।

*संक्षिप्त प्रस्तुति

प्रबंधन



स्वच्छ और सुरक्षित दूध उत्पादन

डा. संजय कुमार भारती¹, डा. सविता कुमारी², डा. अंजय³ एवं डा. पुरुषोत्तम कौशिक⁴

1. सहायक प्राध्यापक-सह-कनीय वैज्ञानिक, शरीर रचना विभाग
2. सहायक प्राध्यापक-सह-कनीय वैज्ञानिक, सूक्ष्म विज्ञान विभाग
3. 4. सहायक प्राध्यापक-सह-कनीय वैज्ञानिक, पशुजन स्वास्थ्य विभाग

बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय,
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-800014

दूध व्यवसाय के प्रतिस्पर्धा के दौर में हम तभी आगे बढ़ सकते हैं, जब उपभोक्ताओं को सर्वोत्तम, सुरक्षित एवं अच्छे स्वाद वाले दुग्ध और दुग्ध उत्पाद उपलब्ध कराएं। स्वच्छ दूध से ही अच्छे गुणवत्ता वाले उत्पादों का निर्माण सम्भव है, अतः यह जरूरी है कि दूध की गुणवत्ता को कायम रखने के लिए सख्त एवं प्रामाणिक तरीकों को अपनाया जाय। स्वच्छ दूध वह दूध है जिसमें गंदगी दिखाई न दे, साथ ही वह हमारे स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छी सुवास तथा पौष्टिकता वाला हो, जो सुरक्षित हो, जिसमें जीवाणु की संख्या कम से कम हो, एंटीबायोटिक के अंश से ग्रसित न हो। दूध ग्रीष्म खराब हो जाने वाला भोज्य पदार्थ है। उच्च पोषक तत्वों एवं आर्द्रता के कारण सूक्ष्म जीवाणुओं के पनपने के लिए भी उचित माध्यम प्रदान करता है, जो कई खतरनाक रोगों का स्रोत बन सकता है। उचित प्रबंध से स्वच्छ दूध उत्पादन संभव है

स्वस्थ पशु के अयन से निकलने वाले दूध में जीवाणुओं की संख्या 500-2000 जीवाणु/मिलीलीटर होती है, जो दूध उत्पादन के विभिन्न चरणों में संदूषित होकर कई

मिलियन/मिलीलीटर हो जाता है। अतः जरूरी है कि दूध उत्पादन से लेकर उपभोग तक के हर स्तर पर दूध की गुणवत्ता पर ध्यान दिया जाय, जिसके लिए बेहतर प्रबंधन

पशुओं के बाड़े का प्रबंधन

- प्रायः पशुओं के बांधने के स्थान पर गंदगी होने से उनके अयन, थनों एवं त्वचा में गोबर, मिट्टी, विभिन्न तरह के स्राव, शरीर के बाल, चारे एवं दाने के अंश इत्यादि लग जाते हैं, जो दूध को संक्रमित कर देते हैं। अतः मवेशियों हेतु स्वच्छ बाड़े की व्यवस्था होनी चाहिए, जो ऊँचे स्थान पर जल-जमाव तथा मक्खी-मच्छरों से मुक्त, हवादार तथा मनुष्यों के रहने के स्थान से अलग हो।
- बाड़े की सतह थोड़ी ढालू हो तथा गोबर एवं मूत्र के निष्कासन की समुचित व्यवस्था हो।
- बाड़े की सफाई, पशु स्नान एवं पिलाने के लिए स्वच्छ जल की व्यवस्था हो।
- बाड़े में समय-समय पर कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करना चाहिए, जो दूध निकालने के 2-3 घंटे पूर्व या बाद में हो, ताकि दूध को इसकी दुर्गंध से बचाया जा सके।
- बाड़े को यथासंभव सूखा रखें, साथ ही बचे हुए भोजन, कीचड़, गोबर एवं मूत्र की नियमित सफाई करनी चाहिए।
- नाद एवं पानी पीने के बरतन की प्रतिदिन सफाई करनी चाहिए।
- दूध में कीटनाशक का पाया जाना एक चिंताजनक बात है, अतः इसे रोकने के लिए किसानों द्वारा इन रसायनों का प्रयोग आपूर्तिकर्ताओं के निर्देशानुसार ही करना चाहिए।

एवं साफ-सफाई की आवश्यकता है। दूध उत्पादन के स्तर पर कुशल प्रबंधन के माध्यम से रोग फैलाने वाले जीवाणुओं, गोबर, दूषित पानी, वायु एवं वातावरण और दूध के दोहन एवं रख-रखाव में उपयोग होने वाले गन्दे बरतनों एवं उपकरणों से दूध को सुरक्षित रखा जा सकता है। साथ ही दुग्ध परिवहन एवं प्रसंस्करण में भी सावधानी अपनाकर दूध की गुणवत्ता को अच्छा रख सकते हैं। स्वच्छ दुग्ध उत्पादन की आवश्यकता अनेक कारणों से है :

- दुग्ध व्यवसाय से ज्यादा लाभ एवं आर्थिक समृद्धि हेतु।
- दुग्ध एवं दुग्ध उत्पादों की गुणवत्ता एवं उसकी संचय क्षमता की वृद्धि हेतु।
- मनुष्य से पशु में तथा पशु से मनुष्य में बीमारी का संक्रमण रोकने हेतु।
- विश्व व्यापार संगठन के गुणवत्ता मानकों का पालन करने हेतु।
- आन्तरिक एवं अंतरराष्ट्रीय व्यवसायिक प्रतिस्पर्द्धा में खरा उतरने हेतु।
- विश्व व्यापार संगठन के द्वारा निर्धारित निर्यात प्रावधानों का सही तरीके से पालन करने हेतु।

पशु के स्वास्थ्य का प्रबंधन

- हर पंद्रह दिनों पर थनैला रोग के लक्षणों हेतु दूध की संरचना एवं पशुओं की जांच क्रमशः कैलिफोर्निया मैस्टाइटिस टेस्ट एवं मैसट्रीप से करनी चाहिए।
- समय-समय पर पशुओं के संक्रामक रोग यथा टीबी, ब्रूसेला, खुरपका-मुंहपका आदि के लिए जाँच करनी चाहिए।
- पशुओं का टीकाकरण नियमित रूप से कराना चाहिए।
- धूल, मिट्टी, गोबर आदि गंदगी से बचाने हेतु पशुओं की प्रतिदिन सफाई करनी चाहिए।
- बीमार पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखना चाहिए।
- शरीर के पिछले हिस्से, पैर, पूंछ एवं अयन के पास के लम्बे बालों को समय-समय पर काटते रहना चाहिए।

पशुओं के भोजन का प्रबंधन

- भोजन में अचानक परिवर्तन नहीं करना चाहिए।

- पशु को खनिज-लवण युक्त संतुलित एवं शुद्ध भोजन देना चाहिए।
- गोभी, शलजम, प्याज, लहसुन जैसी सब्जियाँ पशुओं से दूर रखनी चाहिए तथा उन्हें खाने नहीं देना चाहिए, ये दूध में दुर्गंध पैदा करते हैं।
- बासी, फफूंद एवं कीटनाशक संक्रमित भोजन पशुओं को नहीं देना चाहिए।

दोहक/ग्वाला के स्वास्थ्य का प्रबंधन

- अच्छी गुणवत्ता वाले दूध के उत्पादन में दूध दुहने वाला सीधे तौर पर उत्तरदायी होता है, अतः जरूरी है कि वह किसी भी प्रकार के संक्रामक रोग (कॉलरा, टाइफाइड, टीबी इत्यादि), सर्दी-जुकाम, संक्रमित घाव, चोट आदि से मुक्त हो, ताकि दूध का संक्रमण रोका जा सके।
- दोहक के कपड़े साफ तथा उसके बाल, दाढ़ी एवं नाखून ठीक से कटे होने चाहिए।
- दोहक को दूध दुहने के पूर्व एवं बाद में अपना हाथ अच्छे से धोना चाहिए।

दूध दुहान का प्रबंधन

- प्रायः गाय के पैरों को रस्सी से बांधकर दूध को निकाला जाता है, बार-बार प्रयोग से रस्सी पेशाब, गोबर, दूध की छींटे लगने से गंदी हो जाती है। अतः समय-समय पर साबुन से धोकर और सुखाकर रस्सी को दुहान में उपयोग करना चाहिए।
- दूध दुहने की प्रक्रिया 5-7 मिनट में पूरी हो जानी चाहिए। दूध को नियत अन्तराल पर आरामदायक रूप में पूर्ण मुट्ठी विधि द्वारा सम्पूर्ण रूप से निकालना चाहिए।
- दूध दुहने के पूर्व थन को धोकर साफ एवं सूखे कपड़े या तौलिये से सुखाना चाहिए।

- दुहान का प्रथम दूध यानि दूध की एक-दो धार अलग बरतन या कप में निकाल कर फेंक देना चाहिए, उसे दूध दुहने के स्थान पर नहीं गिराना चाहिए, अन्यथा मक्खियों को आकर्षित कर वातावरण को दूषित करेगा।



हर कदम पर स्वच्छता

- दूध को सूखे हाथों से दुहना चाहिए, अक्सर देखा जाता है कि दोहक दूध से या तेल से हाथ गीला करके दूध दुहते हैं, ऐसा करने से बचना चाहिए, क्योंकि इससे दूध संक्रमित होने की संभावना बढ़ जाती है।
- दूध दुहने के बाद थन को कपड़े से साफ कर हलके एंटीसेप्टिक में डुबाना चाहिए।
- दूध दुहने के तुरन्त बाद पशु को बैठने नहीं देना चाहिए, अन्यथा दुग्ध नलिकाओं के खुले होने के कारण संक्रमण हो सकता है। इसलिए बेहतर होगा कि दूध दुहने के बाद पशु को खाना दिया जाय, ताकि पशु लम्बे समय तक खड़ा रहे।
- एन्टीबायोटिक से उपचारित पशुओं के दूध को अन्य पशुओं के दूध के साथ मिश्रित नहीं करना चाहिए।

- थनैला रोग से सक्रामित पशुओं को सबसे अन्त में दुहना चाहिए और वैसे दूध को उपयोग नहीं करना चाहिए।
- यदि दूध निकालने की प्रक्रिया मशीन द्वारा की जाती है तो दूध दुहने के उपकरणों को दोहन के पंद्रह मिनट पूर्व एंटीसेप्टिक से धोना चाहिए। दूध दुहने के बाद भी उपकरण को अच्छे से साफ करना चाहिए।
- दुग्ध संग्रह केन्द्र के कमरे एवं आस-पास की जगह स्वच्छ एवं जल-जमाव से मुक्त होना चाहिए।
- दूध को यथा संभव शीघ्र ही ठण्डा करना चाहिए, क्योंकि 3-4 घंटों में दूध के गुणों का क्षय होना शुरू हो जाता है। यदि दूध ठण्डा करने का साधन उपलब्ध नहीं हो तो दूध में लैक्टोपरॉक्सीडस जैसे रसायन का उपयोग कर संचय क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।

दूध के संचय, परिवहन एवं प्रसंस्करण का प्रबंधन

- दूध दुहने का बरतन स्टेनलेस स्टील, गैलवेनाइज्ड लोहे या एल्यूमिनियम का होना चाहिए, जो बिना जोड़ या दरार वाला हो और जिसे आसानी से साफ किया जा सके।
- दूध दुहने के बाद इसे कभी खुला नहीं छोड़ना चाहिए, हमेशा ढंककर, ठण्डे, छायादार एवं साफ जगह पर रखना चाहिए।
- दूध को कम से कम समय में निकट के दुग्ध संग्रह केन्द्र पर ले जाना चाहिए।
- यदि दुग्ध उत्पादक द्वारा दूध को दुग्ध संग्रह केन्द्र ले जाने के क्रम में बर्तन को दोहन के बर्तन से बदल दिया जाता है तो दूध के संदूषित होने की संभावना बढ़ जाती है। अतः यथासंभव उत्पादक को दोहन वाली बाल्टी/बर्तन में ही दूध को ढंककर सीधे दुग्ध संग्रह केन्द्र पर ले जाना चाहिए।
- संचय करने के पूर्व दूध को साफ कपड़े से छान लेना चाहिए, ताकि यदि कोई खरपतवार या गंदगी का कण दूध में गया हो तो उसे निकाला जा सके।
- दुग्ध संग्रह केन्द्रों से दूध भंडारण टंकी या कैनस्तर में विभिन्न वाहनों द्वारा दूध को दुग्धशालाओं/दुग्ध संयंत्रों तक लाया जाता है। दूध ढोने वाले वाहन में अन्य सामग्रियों को नहीं ले जाना चाहिए तथा गाड़ी साफ होनी चाहिए।
- दूध निकालने के बाद टंकी और कैनस्तर को स्वच्छ तरीकों से धोना चाहिए।
- दुग्ध प्रसंस्करण के पूर्व भी दूध की गुणवत्ता की जांच करनी चाहिए और तय मानकों का पालन करते हुए उत्पादों का निर्माण करना चाहिए।

दूध का उत्पादन स्वच्छ तरीकों से करने पर दूध की प्रारंभिक गुणवत्ता अच्छी रहती है और आगे भी दूध के विपणन एवं दुग्ध उत्पादों के निर्माण में भी गुणवत्ता बनी रहती है। अतः यह जरूरी है कि दूध उत्पादन की मात्रा पर केवल जोर न दें, बल्कि गुणवत्ता पर भी ध्यान दें, क्योंकि उत्तम गुण वाले स्वच्छ दूध से सभी लाभान्वित होते हैं। यह किसानों को उनके दूध का उचित मूल्य दिलाता है, प्रसंस्करण के दौरान बर्बादी को कम करके उच्च कोटि के दूध तथा दुग्ध-उत्पादों के उत्पादन एवं विपणन से व्यवसायियों को लाभ दिलाता है और उपभोक्ताओं को भी अच्छे, स्वास्थ्यवर्द्धक एवं स्वादिष्ट उत्पाद उपलब्ध कराता है। ■

**‘दुग्ध सरिता’ में विज्ञापन
आमदनी बढ़ाने का उत्तम साधन**



साइलेज एवं 'हे' के रूप में हरा चारा संरक्षण

रजनी कुमारी¹, संजय कुमार², बसंती ज्योत्सना³ एवं अमर सिंह मीना⁴

1. वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना
2. सहायक प्राध्यापक एवं वैज्ञानिक, पशुपोषण विभाग, वेटरनरी कॉलेज, पटना
3. वैज्ञानिक, राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर
4. वैज्ञानिक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

फायदेमंद डेयरी फार्मिंग के लिए दुधारू पशुओं को वर्षभर पौष्टिक चारा उपलब्ध कराना आवश्यक है। परंतु यह किसी चुनौती से कम नहीं है, क्योंकि प्रत्येक ऋतु में हरे चारे की उपलब्धता भिन्न होती है। वर्षा ऋतु में (अगस्त, सितम्बर) एवं शीत ऋतु में (जनवरी-मार्च) हरा चारा बहुत मात्रा में पैदा होता है, जबकि मई, जून, नवम्बर एवं दिसंबर में इसकी उपलब्धता बहुत कम हो जाती है। इस कारण हरे चारे का संरक्षण आवश्यक हो जाता है। हरे चारे के संरक्षण द्वारा ना केवल वर्ष भर दुधारू एवं अन्य पशुओं के लिए हरे चारे की उपलब्धता संभव है, बल्कि यह प्रायोगिक एवं प्रासंगिक भी है। हरे चारे का संरक्षण मुख्यतः 'हे' व साइलेज के रूप में किया जाता है। 'हे' सूखा चारा की श्रेणी में व 'साइलेज' रसीला चारा की श्रेणी में आता है।

जब हरा चारा आवश्यकता से अधिक मात्रा में उपलब्ध होता है, तो उसका संरक्षण 'हे' के रूप में किया जाता है। 'हे' बनाने की प्रक्रिया में हरे चारे की नमी को 15-20 प्रतिशत तक लाया जाता है। अच्छी गुणवत्ता वाला 'हे' हरे चारे जितना ही पौष्टिक होता है। इसकी कीमत भी अधिक होती है एवं इसके उपयोग से दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन की वृद्धि भी होती है।

साइलेज बनाने की प्रक्रिया के अंतर्गत हरे चारे को रसीली अवस्था में भूमि के अन्दर या विशेष प्रकार के छावर में दबा कर इस प्रकार रखते हैं कि चारे के बीच हवा ना रह सके। इससे चारा लम्बे समय तक संरक्षित रहता है। इसी रसीले चारे को साइलेज कहते हैं।

'हे' बनाने के लिए कौन-सा हरा चारा चुनें

'हे' बनाने के लिए खोखले व पतले तने वाली पत्तीदार घास का चयन करना चाहिए। घास मुलायम व स्वादिष्ट होनी चाहिए तथा घास में प्रोटीन 7-8 प्रतिशत तथा कैल्शियम 0-5 प्रतिशत होना चाहिए।

'हे' को तैयार करने के लिए हरे चारे को फूल आने से पहले प्रातः काल ओस हट जाने के बाद काटकर पूरे खेत में फैला देना चाहिए। इसके बाद उसे समय-समय पर पलटते रहना चाहिए। धूप और हवा से यह घास धीरे-धीरे सूख जाती है। जब नमी की मात्रा 15 प्रतिशत रह जाए तो इसे ऐसी जगह संचित करें, जहां पानी न पहुंच सके। अच्छी तरह से तैयार 'हे' में घास का हरा रंग कभी समाप्त नहीं होता है। 'हे' को फफूँदी रहित होना चाहिए। 'हे' स्वादिष्ट व मुलायम होना चाहिए। 'हे' में खरपतवार धूल व मिट्टी नहीं होनी चाहिए। उत्तम 'हे' में पत्तियां अधिक मात्रा में पाई जाती हैं और 'हे' में उस घास की सुगन्ध होनी चाहिए, जिससे उसे तैयार किया जाता है।

साइलेज कैसे बनाएं ?

सामान्य हरा चारा फसलों से साइलेज बनाया जा सकता है, परंतु उच्च गुणवत्ता वाले साइलेज के लिए ज्वार, मकई, बाजरा, जई एवं जौ फसलें अनुकूल हैं। बारहमासी

घासों में संकर नेपियर, पैरा घास एवं सुडान घास मुख्य हैं। साइलेज बनाने के लिए फलीदार फसलों का प्रयोग अनुकूल नहीं होता है। हालांकि इन फसलों को बेफलीदार फसलों के साथ अनुकूल मात्रा में मिलाकर साइलेज बनाया जा सकता है।

घास में फूल लगने की अवस्था में सुबह ओस घटने के बाद इसे काटकर दोपहर तक खेत में फैलाकर छोड़ दें जिससे नमी में कुछ कमी आ जाए। दोपहर के बाद इस चारे का बंडल बांधकर क्रम में लगा लिया जाता है। साइलो में सर्वप्रथम कुछ घास बिछायी जाती है, फिर चारे की कुट्टी काटने के बाद साइलो में खूब दबाकर रखते हैं ताकि चारे के बीच हवा न रह जाए। फलीदार घास में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम होती है। अतः चारा भराई के समय शोरा या खनिज अम्ल का छिड़काव करना पड़ता है। चारे को जमीन से डेढ़ या दो फीट ऊंचा भरते हैं क्योंकि बाद में घास का स्तर नीचा हो जाता है। अन्त में साइलो में कुछ घास को काटकर इसे मिट्टी एवं गोबर से लेप कर बन्द कर देते हैं। लगभग 50-60 दिनों तक गड्ढे को बन्द रखने के पश्चात् साइलेज बन जाता है। अब आवश्यकता पड़ने पर किनारे से खोलकर आवश्यकता अनुसार साइलेज निकालकर पशु को खिलाया जा सकता है।

साइलेज द्वारा हरे चारे का संरक्षण अधिक समय तक किया जा सकता है। वर्षा ऋतु में उपलब्ध अधिक चारा को 'हे' के बदले साइलेज बनाना आसान है। साइलेज द्वारा कम खर्च पर उच्च कोटि का हरा चारा उपलब्ध होता है जो अधिक पौष्टिक एवं सुपाच्य होता है। यह विटामिन 'ए' से भरपूर होता है। हालांकि पशु को शुरुआती दौर में इसका स्वाद पसंद नहीं आता परंतु हरे चारे के साथ खिलाकर इसका हल निकाला जा सकता है। 'हे' की अपेक्षा साइलेज कम जगह लेता है। इसलिए इसका भण्डारण आसान है। आज जब हर मंच पर किसानों की आय दुगुनी करने की बात हो रही है, हरा चारा संवर्धन अधिक प्रासंगिक हो जाता है। युवा किसान इस तकनीक को स्टार्टअप व्यवसाय के रूप में अपना कर अपने तथा अन्य युवाओं के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न कर सकते हैं।

दुग्ध सरिता में विज्ञापन दें, लाभ बढ़ाएं

RATE CARD**DUGDH SARITA**

Position	Rate per insertion	Inaugural Offer
	Rs.	Rs.
Back Cover (Four Colours)*	18,000	12,000
Inside Front Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Back Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Right Page (Four Colours)	10,800	7,000
Inside Left Page (Four Colours)	9,600	6,000
Facing Spread (Four Colours)	16,800	11,000
Half Page (Four Colours)	5400	4000



* Fifth colour: extra charges will be levied.

TECHNICAL DETAILS

Magazine Size in cm — Height : 26.5 cm; Width: 20.5 cm

Please leave 1 cm space from all side i.e. top-bottom-left and right. For bleed size artwork, please provide 1 cm bleed from all side over and above given size of the magazine.

Terms and Conditions

- Indian Dairy Association reserves the exclusive right to reject any advertisement, whether or not the same has already been acknowledged and/or previously published.
- The advertisement material should reach the IDA House on or before the informed deadline date.
- Cancellation of advertisements is not accepted after the booking deadline has expired.
- The Association will not be liable for any error in the advertisement.
- The Association reserves the right to destroy all material after a period of 45 days from the date of issue of the last advertisement.

Artwork

The ad material may be sent through email on the ID: ida.adv@gmail.com in PDF & JPG OR CDR & JPG format only. All four colour scan should be saved as CMYK not RGB. Processing charges would be borne by the advertiser as per actuals.

Mode of Payment

100% Advance. Payment should be made through Bank Draft payable at New Delhi / Cheque payable at par / NEFT in favour of the "Indian Dairy Association" along with the Release Order. Bank details are as follows: Name: Indian Dairy Association; SB a/c No: 90562170000024; IFSC: SYNB0009009; Bank: Syndicate Bank; Branch Address: Delhi Tamil Sangam Building, Sector - V, R.K. Puram New Delhi.

Contact for Ads

Mr. Narendra Kumar Pandey
Executive-Publications. Ph. (Direct): 011-26179783 M.: 9891147083

Indian Dairy Association

IDA House, Sector-IV, R.K. Puram, New Delhi-110 022
Ph.: 91-11-26165355, 26170781, 26165237 Fax: 91-11-26174719
E-mail: ida.adv@gmail.com Web: www.indairyasso.org

जन्म देना एक आशीर्वाद है



परन्तु ब्यांत के बाद पशु को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे:

- जेर का फसना तथा गर्भाशय में संक्रमण
- कमजोरी एवं तनाव
- भूख न लगना तथा अन्य पाचन समस्याएं
- दूध उत्पादन में कमी

ब्याने के बाद की समस्याओं को दूर करने के लिए भरोसा करें

एक्सापार

जेर गिराने व गर्भाशय की सफाई के लिए

रुचामैक्स

क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक

रैस्टोबल

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए



**आयुर्वेद
लिमिटेड**

कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर,
प्लॉट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र.)
दूरभाष: +91-120-7100201 फैक्स: +91-120-7100202
ई-मेल: customer@ayurved.com वेब: www.ayurved.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587

रजिस्टर्ड ऑफिस: चौधी मंजिल, सागर
प्लाजा, डिस्ट्रिक्ट सेक्टर, लक्ष्मी नगर,
विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092

**पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान**



अमूल दूध पीता है इंडिया



अमूल दूध



एशिया का सबसे बड़ा मिल्क ब्रांड

खुला दूध गंदा और सेहत के लिए हानिकारक होता है. अमूल आपके लिए लाते हैं पाश्चराइज्ड पाउच दूध. यह शुद्ध और विटामिन्स से भरपूर होता है. इसे अत्याधुनिक मशीनों की मदद से पैक किया जाता है, इसलिए यह इंसानी हाथों से अनछुआ रहता है. अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें 011-28524336/37.

Follow us: [f /amul.coop](https://www.facebook.com/amul.coop) | [t /amul_coop](https://www.twitter.com/amul_coop) | [You Tube /amul_tv](https://www.youtube.com/amul_tv) | [i /amul_india](https://www.instagram.com/amul_india) | Visit us at <http://www.amul.com>

10824579HIN

प्रकाशक व मुद्रक नरेश कुमार भनोट द्वारा, इंडियन डेयरी एसोसिएशन के लिए रॉयल आफसेट, ए-89/1, फेज-1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित व इंडियन डेयरी एसोसिएशन, आईडीए हाऊस, सेक्टर-4, आर. के. पुरम, नई दिल्ली - 110022 से प्रकाशित, सम्पादक - जगदीप सक्सेना